राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १६ –

सोमनाथविरचिता

कृष्णगीतिः

★

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३] प्रति ७५० [मूल्य रु०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १६ –

सोमनाथविरचिता

कृष्णगीतिः

★

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३] प्रति ७५० [मूल्य रु०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

RĀJASTHĀNA PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ
Published by the Government of Rajasthan
A Series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

★

General Editor
Acharya JINA VIJAYA MUNI, Puratattvacharya,
Honorary Member of the German Oriental Society; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; and Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad.
Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute.

No. 16

KṚṢṆAGĪTĪ

of

SOMANĀTHA

Edited by

Prof. Dr. PRIYABĀLĀ SHĀH
M. A., Ph. D. (Bombay), D. Litt (Paris)
(Head of the Department of Ancient Indian Culture : Ramanand Arts College, Ahmedabad.)

Rajasthan Oriental Research Institute
Jaipur

1956

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोमनाथविरचिता

कृष्णगीतिः

★

सम्पादिका
डॉ. प्रियबाला शाह, एम्. ए., पीएच्. डी. (बंबई),
डि. लिट् (पेरिस)
(प्राध्यापिका, रामानन्द आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद)

★

—: प्रकाशक :—

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य रू० [खिस्ताब्द १९५६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक –

संचालक – राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, के आदेशानुसार – गोपालनारायण बोहरा ।

मुद्रक –

जयन्ति दलाल, वसंत प्रिण्टींग प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद

और

मुकुन्द के. शास्त्री, इला प्रिण्टरी (वल्लभ मुद्रणालय) पानकोर नाका, अहमदाबाद ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रधान संपादकीय वक्तव्य

★

राजस्थान एवं गुजरात, मालवा आदि प्रदेशोंमें प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंके बिखरे हुए एवं जीर्णशीर्ण दशामें जो संग्रह प्राप्त होते हैं उनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं प्राचीन राजस्थानी-गुजराती भाषामें रचित छोटी बडी ऐसी सैंकडों ही साहित्यिक कृतियां उपलब्ध होती हैं जो अभी तक प्रायः अज्ञात और अप्रसिद्ध हैं। विद्वानोंका लक्ष्य प्रायः अभी तक उन्हीं सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके अन्वेषण एवं संशोधनकी तरफ रहा है जो यत्रतत्र यथेष्ट परिमाणमें उपलब्ध होते हैं। ग्रन्थोंके संपादन और प्रकाशन के विषयमें भी प्रायः यही प्रथा चली आ रही है। सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके सिवा छोटी छोटी एवं प्रकीर्ण रचनाओंके विषयमें विद्वानोंका विशेष लक्ष्य नहीं जाता है और इसलिये अभी तक ऐसी रचनाओंके संपादन-प्रकाशनका मुख्य प्रयत्न प्रायः नहींसा हुआ है। हमारे प्राचीन इतिहास एवं सांस्कृतिक सामग्रीकी दृष्टिसे इन फुटकर रचनाओंमें जो ज्ञातव्य छिपे पडे हैं उनकी तरफ हमारा लक्ष्य बिल्कुल नहीं गया है-ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्तिकी बात नहीं होगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरका कार्य प्रारंभ करते समय, हमारा मुख्य लक्ष्य इस प्रकारके प्रकीर्ण साहित्यका अन्वेषण, संग्रह, संरक्षण, संशोधन एवं प्रकाशन आदि करनेका रहा है और तदनुसार, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला द्वारा ऐसी अनेकानेक साहित्यिक रचनाओंको, सुयोग्य विद्वानों द्वारा शोधित-संपादित कराकर प्रकाशमें रखनेका आयोजन हमने किया है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके १६ वें पुष्पके रूपमें सोमनाथ कवि विरचित कृष्णगीति नामक यह छोटासा परंतु सुन्दर संस्कृत गीतिकाव्य प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्राचीन लिखित पोथीकी प्राप्ति एवं संपादन आदिके विषयमें इतः पूर्व, प्रस्तुत ग्रन्थमालाके १५ वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित, श्रीहर्ष कवि विरचित शृंगारहारावलिके अपने प्रास्ताविक वक्तव्यमें हमने कुछ उल्लेख कर दिया है। ग्रन्थ और ग्रन्थकारके विषयमें संपादनकर्त्री विदुषीने अपनी प्रस्तावनामें, ज्ञातव्य वस्तु पर यथायोग्य प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया है। संस्कृत साहित्यमें गीतिकाव्यके रूपमें महाकवि जयदेव-विरचित गीतगोविन्द एक सर्वोत्कृष्ट रचना है और उसकी प्रतिष्ठा सर्वोत्तम है। मालूम देता है कि गीतगोविन्दकी अनुपम रचनाके अनुकरणमें कई ऐसी रचनाएं निर्मित हुई हैं, जिनमें प्रस्तुत रचना भी एक गणनीय स्वरूप है। इस प्रकारकी एक और रचना रामगीत नामकी भी हैं जिसकी लिखित प्रति, साहित्यखोजी मुनिवर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्रीकान्तिसागरजीने हमें दिखाई थी। ऊर्मिशील कवियोंको शृंगाररस और भक्तिरसकी अभिव्यंजना करनेके लिये इस प्रकारके गीतिकाव्योंमें बहुत मुक्त और मनोरम अवकाश मिल जानेकी विशेष सुविधा रहती ही है, पर विरक्त-चित्त कवियोंको भी अपनी शान्तरसप्रिय काव्यप्रतिभाको बहलानेकी सानुकूलता इस शैलीमें यथेष्ट मल सकती है और इस कारण कुछ कवियोंने शान्ति-रसपोषक रचनाएं भी इस शैलीमें निर्मित की हैं जिनमें जैन-यतिवर महोपाध्याय विनयविजय विरचित शान्तसुधारस नामक गीतिकाव्य बहुत ही उत्तम और प्रसिद्ध कृति विशेष उल्लेखयोग्य है।

आशा है कि विद्वानोंको सोमनाथ कविकी यह कृति अवश्य आदरणीय प्रतीत होगी।

अनेकान्त विहार
अहमदाबाद.
आषाढशुक्ल १३. वि. सं. २०१३
(२०–७–५६)

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

PREFACE OF THE GENERAL EDITOR

★

There are still hundreds of old manuscripts big and small in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa and old Rājasthāni-Gujarāti lying scattered over Rājasthāna, Gujarāta, Mālawā and other regions of our country. Many of these are still unknown and unpublished. Up till now scholars have generally devoted themselves to works which are comparatively bulky, well known and available in great number. The same outlook prevails also amongst publishers of Oriental series.

But in addition to those big and well-known works, there are many small ones on a variety of subjects which have not attracted the attention that they deserve. In fact, no major attempt has been made to edit and publish these small works on important subjects. It would be no exaggeration to say that these works which contain important material for the history and culture of our country and which embody not a negligible part of our ancient learning have been mostly neglected, probably because they are in small manuscripts and rare to find.

It has been our endeavour from the very inception of Rājasthāna Oriental Research Institute to search for, collect and preserve mss. of such small works on various subjects and also to edit and publish them. Accordingly we have arranged for critical editions of such works at the hands of competent scholars and their publication in the Rājasthāna Purātana Granthamālā.

Kṛṣṇagīti, a small but beautiful Sanskrit lyrical poem written by the poet Somanātha, is being offered as the sixteenth number of the Rājasthāna Purātana Granthamālā. I have referred to the finding of the old manuscript of this work and its publication in this series in my preface to the Śṛṅgārahārāvalī of Śrī Harṣa, the fifteenth number of this series. The learned editor has tried in her introduction to throw light on relevant topics connected with the subject-matter and the author.

Gīta-Govinda of the famous poet Jayadeva occupies a prominent place in Sanskrit literature as a musical poetic composition of great lyric beauty. Its great reputation has inspired some poets to make it a model for their literary effort. The present work is a noteworthy poem of that kind. A manuscript of another poem of this type - Rāmagīta that was shown to me recently by diligent research worker Muni Śrī Kantisagaraji.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

This type allows great freedom for the play of sweet Śṛngāra and Bhakti. But even some ascetic poets have found this form convenient for their Śānta-rasa; and there are a few poems of Śāntarasa also in this form. Of these Śāntasudhārasa, a poem by the great Jain sage Mahāmahopādhyāya Vinayavijaya is a very good example which deserves notice.

It is hoped that this fine poetic composition of Somanātha will be much appreciated by the learned.

Muni Jinavijaya
Hon. Director,
Rajasthan Oriental Research Institute,
JAIPUR.

Anekanta Vihar
Ahmedabad.
20-7-56

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

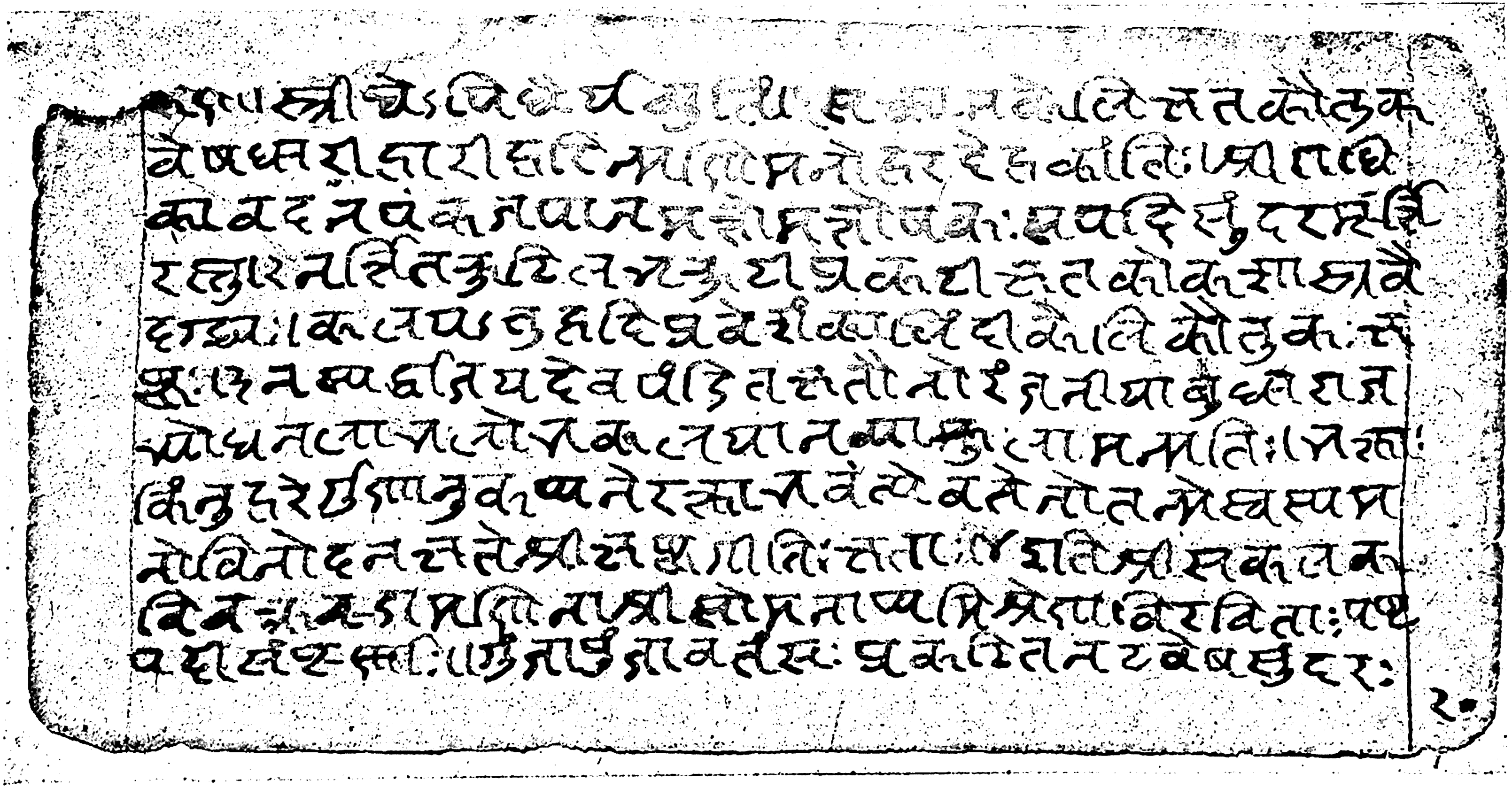

[कृष्णगीति पत्र २० की प्रतिकृति

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

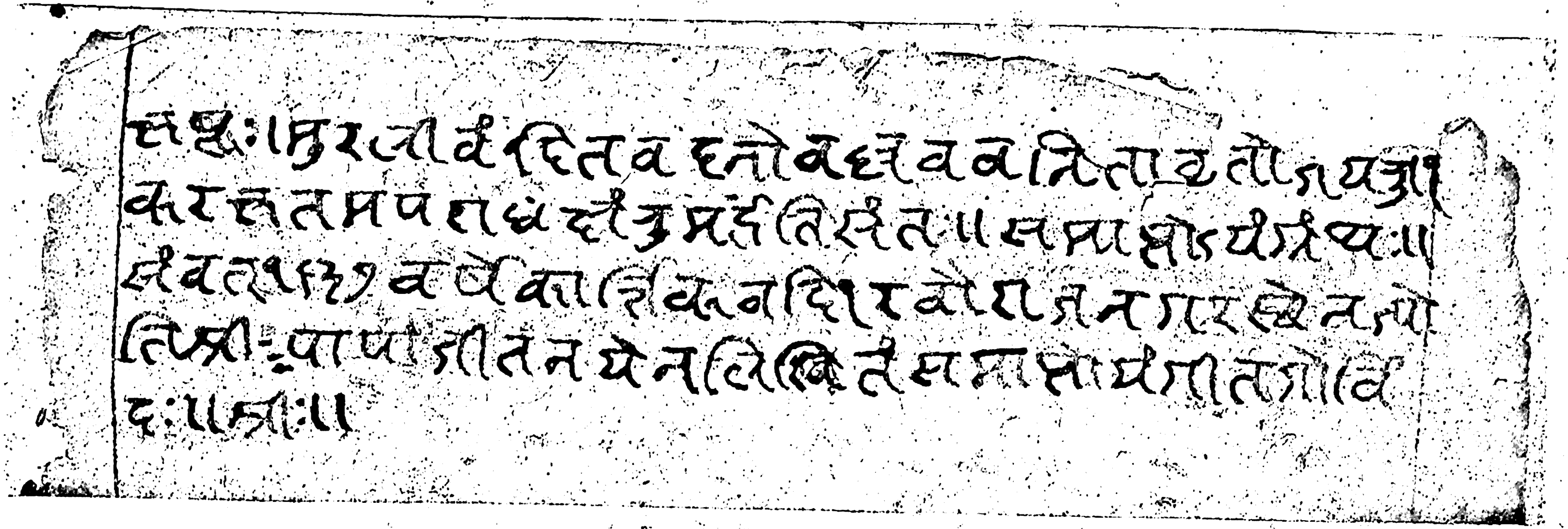

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला]

[कृष्णगीति अन्त्य पत्र २१ की प्रतिकृति]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

Introduction

I

Ms Material

The text edited in the present work is based upon a single Ms. in the possession of Gujarat Vidyasabha, Ahmedabad.

Ms. no. 3623.

Name—[1] Kṛṣṇagīti

Author—Somanātha

Material—Paper

Script—Devanāgarī

Extent of the Ms.—20 folios

Size of leaves—9·25 × 4·25 inches

Area of writing—8 × 3·5 inches

Number of lines per page—about 11

Letters—about 24 per line.

Writing—farily uniform and legible

Place and scribe—Rājanagara (probably Ahmedabad), and the astrologer Śri Āpājītanaya (? Son of Āpāji) respectively.

Date—Saṁvat 1637, Kārtika Vadi 1 Sunday (i. e. 23-10-1580 A. D.)

Begins—श्रीगणेशाय नमः । श्रीगोपालाय नमः ।

वंदे नंदकिशोरस्य चरणांबुजमद्भुतम् । यद्गोपिकाकरांभोजभासुरश्रीविवर्द्धनम् ॥ १ ॥

Ends—

तन्मे स्वस्य मनोविनोदनकृते श्रीकृष्णगीतिः कृताः ॥ ४ ॥

Colophon—

इति श्रीसकलकविचक्रचूडामणिना श्रीसोमनाथमिश्रेण विरचिता अष्टपदी संपूर्णाः । गुंजापुंजावतंसः प्रकटितनटवेषसुंदरः कृष्णः । मुरलीवंदितवदनो वल्लववनितावृतो जयतु ॥ १ ॥ करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति संतः ॥ २ ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥ संवत् १६३७ वर्षे कार्तिक वदि १ रवौ राजनगरस्थेन ज्योति श्री आपाजीतनयेन लिखितं समाप्तोऽयं गीतगोविंदः ॥ श्रीः ॥

Mr. M. Krishnamachariar in his 'History of Classical Sanskrit Literature' has noted a Kṛṣṇagita of Somanātha (Page 343). In the footnote No. 16 he states thus—"Printed, Bombay." I tried to secure a copy of this work from the libraries of such institutions as the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Gujarat Vidyapitha, Ahmedabad, but nowthere a copy of this

---

1. The author at the end of his work calls it श्रीकृष्णगीति, even though in the first aṣṭapadi he rerers to it as कृष्णस्य गीतम् (Introductory ślo. 7, page 1 and Padi 8, Page 2). I have adopted कृष्णगीतिः as the title of the work. It may be noted that the scribe refers to it as गीतगोविन्द.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

a rāga or rāgas and in one case tāla also mentioned at the top of each one of them.

The subject-matter of the poem is the amour of Rādhā and Kṛṣṇa. Rādhā in a dream sees her lover in the company of his another beloved and wakes up in wrath and tears, even though Kṛṣṇa himself rouses her from sleep. She assumes māna (resentment) and shuns the company of Kṛṣṇa. A Govinda-dūtī (woman-messenger of Govinda or Kṛṣṇa) comes to Rādhā who is in her arbor on Yamunā and entreats her to give up her resentment. She appeals to her by saying that she should not find fault with her lover for what was only her dream and that Kṛṣṇa is eagerly waiting for her in a new pleasure-arbor (Aṣṭapadī 2, Śloka 4). Then a Sakhī (a woman friend) seeing that Rādhā, in her heart, is all engrossed in Kṛṣṇa and that she is equally anxious to meet him, but would not on her own initiative go to him, persuades her to meet Kṛṣṇa (A. 3). The Kṛṣṇa-dūtī takes this friend of Rādhā to Kṛṣṇa and informs him of Rādhā's love-lorn state through her mouth[1] (A. 4). In the fifth aṣṭapadī after describing the condition of Rādhā, the Sakhī again impresses the same thing on Mādhava through a song.[2] Then she returns to Rādhā and assures her that Kṛṣṇa in excitment of love continuously mutters the name Rādhā : (कामाकुलो जपति नाम तवैव राधे ।) and that he will receive her with regard and love (A. 6). Rādhā, who was only waiting for an excuse, goes to Kṛṣṇa and give up her resentment ostensibly to favour him with her love ('प्रसादं कर्तुं' Ślo. 1), but actually because the separation from Kṛṣṇa had become unbearable to her.

The remaning aṣṭapadīs are devoted to the description of the amorous dalliance of Rādhā and Kṛṣṇa. In the twentieth i. e. the last aṣṭapadī, Rādhā requests Kṛṣṇa to dress and ornament her like himself and a similar request is made by Kṛṣṇa to Rādhā. This is symbolic of Kṛṣṇa becoming Rādhā and Rādhā becoming Kṛṣṇa-the complete identification of the Bhakta and the Bhagavat.

Thus the poem depicts the two aspects of Śṛṅgāra, Vipralambha and Sambhoga. The Vipralambha here is, what is technically called, a Māna Vipralambha. In this poem, māna or resentment results from a dream of the Nāyikā. It is therefore not of the technical variety which is either Śruta, Anumita or Dṛṣṭa.[3].

1. The order of verses 2 and 3 in A. 4 should be reversed.
2. तस्वहृशं समाख्याय पुनर्गीतेन माधवम् । A. 5. Ślo. 3, page 6.
3. Cf. Daśarūpa

अयोगो विप्रयोगश्च संभोगश्चेति स त्रिधा । ५०, अ. ४. ॥
विप्रयोगस्तु विश्लेषो रूढविस्रम्भयोर्द्विधा । ५७ ॥ p. 100.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

This work, however, as said above, is not inspired by the desire of poetic fame, but by the urge of singing the excellence (guṇas) of Hari. (I. 4.) In fact, it is a Kīrtana of Vrajanātha (II. 5.). It is, therefore, a work of Bhaktirasa. It should, therefore, be judged from this point of view.

The type of Bhakti expressed in such works as this is treated by Rūpadevagosvāmī in his Ujjvalanīlamaṇi as follows:—

मुख्यरसेषु पुरा यः संक्षेपेणोदितो रहस्यत्वात् ।
पृथगेव भक्तिरसराट् स विस्तरेणोच्यते मधुरः ॥ २ ॥
वक्ष्यमाणैर्विभावाद्यैः स्वाद्यतां मधुरा रतिः ।
नीता भक्तिरसः प्रोक्तो मधुराख्यो मनीषिभिः ॥ ३ ॥

तत्र विभावेष्वालम्बनाः-

अस्मिन्नालम्बनाः प्रोक्ताः कृष्णस्तस्य च वल्लभाः । (N. S. pp. 4-5).

Thus this poem, which from a strictly literary point of view would be called a poem of Śṛṅgāra rasa, should properly be called a poem of Bhakti rasa of Madhura type.

This type of Bhakti by its peculiar erotic features has been a subject of discussion among thinkers. The erotic mysticism, that it suggests, is as old as the Upaniṣads, but the true inspiration of the type of Bhakti found in medieval Vaiṣṇavism should be traced to Śrīmadbhāgavata and the Bhaktisūtras of Śāṇḍilya and Nārada. As Macnicol says, " the goal of all mysticism is the same, namely ' the unitive life ' and the method of all mysticism is love and in the whole Bhakti movement this is the accepted means by which the worshipper and the object of his worship are brought together. "[1] Nārada and Śāṇḍilya also emphasise this aspect of love in their definitions of Bhakti.

Nārada says, सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा (I-2). Śāṇḍilya describes it as सा परानुरक्तिरीश्वरे (I-2). Thus the sentiments of प्रेम and अनुराग towards

---

मानप्रवासभेदेन मानोऽपि प्रणयेर्ष्ययोः ।
तत्र प्रणयमानः स्यात्कोपावसितयोर्द्वयोः ॥ ५८ ॥
स्त्रीणामीर्ष्याकृतो मानः कोपोऽन्यासङ्गिनि प्रिये ।
श्रुते वानुमिते दृष्टे श्रुतिस्तत्र सखीमुखात् ॥ ५९ ॥
उत्स्वप्नायितभोगाङ्कगोत्रस्खलनकल्पितः ।
त्रिधानुमानिको दृष्टः साक्षादिन्द्रियगोचरः ॥ ६०, अ. ४ ॥ [N. Sagar Edition]

Here स्वप्नायित refers to the utterances in dream of the lover from which the lady infers that his mind is set upon another woman. In our text the dream is of Rādhā herself.

For inappropriateness of this type of Śṛṅgāra, see Rasagaṅgādhara of Jagannātha. page 52, Edition 1916, N. Sagar. See below. Cf. also Kāvyaprakāśa U. 7. p. 443 (B. O. R. I. Poona).

1. Encyclopaedia of Religion and Ethics. Vol. 9, page 116.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

God become the contents of Bhakti. This Bhakti in the case of some mystics tended to express itself through a feeling akin to erotic and a language suggestive of amour. It was this tendency of some bhaktas which culminated in such works as Gītagovinda and Kṛṣṇagīti.[1]

IV

Literary Form

I need not here show the many parallels of Kṛṣṇagīti with Gītagovinda. The student will be able to trace them easily. But the question of the literary genre of this type of composition requires to be considered, as there is a great difference of opinion amongst scholars on this matter. Keith observes in connection with Gītagovinda : " The form of the poem is extremely original, and has led to the belief that we have in the poem a little pastoral drama, as Jones called it, or a lyric drama, as Lassen styled it, or a refined Yātrā, as Von Schroeder preferred to term it. Pischel and Le'vi, on other hand, placed it in the category between song and drama, on the ground *inter alia* that it is already removed from the Yātrā type of dramatic performance by the fact that the transition verses are put in definite form and not left to improvisation,

1. Panditarāja Jagannātha has in his Rasagaṅgādhara, taken to task the writers of this class. He says, [2]तत्र रत्यादीनां भयातिरिक्तस्थायिभावानां सर्वत्र समत्वेऽपि रतेः संभोगरूपाया मनुष्येष्विवोत्तमदेवतासु स्फुटीकृतसकलानुभाववर्णनमनुचितम् । आलम्बनगताराध्यत्वस्यानुभावगत-मिथ्यात्वस्य च प्रतीत्या रसानुल्लासापत्तेः । न च साधारणीकरणादाराध्यत्वज्ञानानुत्पत्तिरिति वाच्यम् । यत्र सहृदयानां रसोद्बोधः प्रमाणसिद्धस्तत्रैव साधारणीकरणस्य कल्पनात् । अन्यथा स्वमातृविषयकस्वपितृरतिवर्णनेऽपि सहृदयस्य रसोद्बोधापत्तेः । जयदेवादिभिस्तु गीतगोविन्दादिप्रबन्धेषु सकलहृदयसंमतोऽयं समयो मदोन्मत्तमतङ्गजैरिव भिन्न इति न तन्निदर्शनेनेदानींतनेन तथा वर्णयितुं साम्प्रतम् रसगङ्गाधर, प्रथममानन-गुणप्रकरण, पृ. ६२, निर्णयसागर Edi. of 1916. I am indebted for this reference to Prof. R. B. Athvale of the L. D. Arts College, Ahmedabad. Thus जगन्नाथ clearly points out the inappropriateness of making the divine beings subject of erotic poetry.

For a criticism of this type of erotic mysticism, see Ranade- " Survey of Upanishadic Philosophy " (Pp. 348-349). Also compare the following remark of Macnicol, " in fact the danger of Bhakti, become too ardent and lapsing into mystic-eroticism is apparent in the medieval expression of this emotion." -Encyclopaedia of Religion and Ethics. Vol. 9, p. 116. For introduction of Rādhā-worship in Vaiṣṇavism, see Vaiṣṇavism and Śaivism by Bhandarkar, page 86.

However, for a justification of this type of Bhakti, compare the following view of Dr. S. K. De:-

" Devout yet sensuous, it expresses.........fervent religious longings in the intimate language of earthly passion, and illustrates finely the use of love-motif in the service of religion. ....Both as a religious and as a literary document, its erotico-mystical attitude, involving a devoutly emotional spiritualisation of sensuous forms and ideas, is personal in ardour, concrete in expression and sincere in appeal."

[Vide: Introduction of Kṛṣṇa-karṇā-mṛta, pages XXVI-XXVII]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

but Pischel also styles it a melodrama. The facts are, however, satisfactorily clear and allow of greater precision of statement. The poet divides the poem into cantos, which is a clear sign that he recognised it to belong to the generic type of kāvya, and that he did not mean it to be a dramatic performance with the division into acts, interludes, and so forth. On the other hand, he had before his mind when he wrote, the Yātrās of Bengal, where in honour of Kṛṣṇa in a primitive form of drama dances accompanied by music and song were performed, and in inserting as the most vital element in his poem such songs he doubtless foresaw the use that would be made of them both in the temples and at festivals. The songs are given to us in the manuscripts with precise indication by technical terms of the melody (rāga) and time (tāla) of the music and dance which they were to accompany, and the poet definitely bids us think of songs as being performed in this way before our mental eyes. To conceive of writing such a poem was a remarkable piece of originality, for it was an immense step from the popular songs of the Yātrās, to produce so remarkably beautiful and finished a work. "[1]

I, however, think that even though Gītagovinda is divided into sargas, one cannot merely from that fact call it a mahākāvya which is usually so divided. Somanātha who consciously follows Gītagovinda does not so divide his Kṛṣṇagīti. One may question whether Jayadeva himself had divided his Gītagovinda into sargas or some later scribes. I would, therefore, put both these works under a literary form which gives scope to recitation (Pāṭha), vocal music (Gīta), dance and drama (Nāṭya). It is possible to find such a form in earlier literary tradition. Hemachandra in his Kāvyānuśāsana has classified [2]Kāvya into Prekṣya and Śravya and has divided the Prekṣya into Pāṭhya and Geya. Under Geyaprekṣya he mentions the following varieties :—

गेयं-डोम्बिकाभाणप्रस्थानशिङ्गकभाणिकाप्रेरणरामाक्रीडहल्लीसकरासकगोष्ठीश्रीगदितरागकाव्यादि ।[3]

---

1. P.–191–92. History of Sanskrit Literature–Keith.

2. A poem meant for recitation and listening is Śravya Kāvya; a poem meant for presentatation that is both for seeing and listening is a Dṛśya Kāvya; a poem for presentation may mainly give scope to recitation, then it would be Pāṭhyaprekṣya; while a poem which may give scope mainly to music with its accompaniment of dance is Geyaprekṣya. K. S. page 432. See also साहित्यदर्पण.

   दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम् । १ सा. द षष्ठः परिच्छेदः (p. 272)

3. See Kāvyānuśāsana of Hemachandra edited by Prof. R. C. Parikh, page 445.

   Abhinavagupta in his commentary on Nāṭyaśāstra mentions and describes these varieties (page 184, G. O. series.). Compare also Sāhityadarpaṇa, page 273, N. Sagar edition and Bhāvaprakāśanam, page 255, G. O. series.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

If we study the definitions of these varieties of Geya-prekṣya, we can easily come to the conclusion that both Gītagovinda and Kṛṣṇagīti would come under one or the other of these types. These have been variously described in different works. Abhinavagupta and Hemachandra describe a Rāgakāvya as follows:—

[1]लयान्तरप्रयोगेण रागैश्चापि विचित्रितम् ।
नानारसं सुनिर्वाह्यकथं काव्यमिति स्मृतम् ॥

A Rāgakāvya is one which is beautified by the use of different dance-rhythms and melodies. It has a variety of rasas and an episode which is properly carried out.

In short, a Rāgakāvya or a Kāvya is distinguished from other types by its dance-rhythms aed melodies.

It can be easily seen that this description of Rāgakāvya can be very well applied to Gītagovinda and Kṛṣṇagīti. In my humble opinion, therefore, both Gītagovinda and Kṛṣṇagīti should be regarded as illustrations of Rāgakāvya which in itself is a variety of Geya-prekṣya-kāvya. I do not deny that some new elements from Yātrās and similar forms might have been adopted in these poems; but essentially they are Rāgakāvyas.

V

MUSIC of KṚṢṆAGĪTI

At the beginning of each aṣṭapadī of Kṛṣṇagīti are mentioned rāgas and in one case rāga and tāla according to which they are to be sung. It is presumed that Somanātha himself must have prefixed these rāgas to the Prabandhas, though the possibility that this might have been done by some later musicians is not altogether excluded. It would be interesting to study the metrical forms as well as the musical forms of these Prabandhas and to find out as to whether they can be sung according to the mode which Somanātha himself must have intended. For this purpose it would be necessary to know the musical structures of these rāgas in the time of Somanātha.

Music is a time-art consisting of a succession of sounds which are fleeting and perishable. It was, impossible, therefore, to preserve the records of musical art as it has been possible in the case of space-arts like those of architecture, sculpture and painting. The only way by

---

1. Abhinavagupta also quotes this verse to describe Rāgakāvya with a difference in one reading namely विवेचितम् for विचित्रितम्

The definition of Rāgakāvya given by Sāhitya-darpaṇa is somewhat different. See page 360, N. Sagar edition.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

which the art of music could be preserved was the oral tradition controlled by the theory or Śāstra of music.

The history of Indian Music can go as far back as that of Sāmaveda; but as that great savant of Indian Music, Pandit V. Bhatkhande has observed, " No scholar either ancient or modern seems to have yet successfully established an intelligible and satisfactory connection between Sāma music and that of the succeeding writers."[1] He further observes, " We have some works like Śikṣās and Prātiśākhyas but they do not carry us very far. If we leave the Vedic times and come to those of the Epics and ancient Dramas, we have ample evidence that music had attained a very high position in society and that it was capable of being regularly studied and taught both as a science and an art; but *as to what it actually was*, we have absolutely no reliable information because none of the music treatises of that period are at present available. Thus we see that barring the Nāṭyaśāstra of Bharata, we are very poorly equipped in the matter of reliable records for faithful history of the early Hindu Period."[1] As to Nāṭyaśāstra and Sangīta Ratnākara, Pandit Bhatkhande observes: " The great difficulty which a student of Nāṭyaśāstra and Ratnākara meets with at the very outset is that of correctly locating the positions of the Śrutis and the Svaras of those two ancient treatises. In the absence of a satisfactory solution of these, the remaining portion of the treatises remain perfectly unintelligible. The Grāmas, Mūrcchanās, Jātis and the Rāgas have all to be evolved, as we know, from the Śuddha and Vikṛta Svaras which again depend upon their Śrutis. The positions of those Śrutis and Svaras, therefore, require to be placed beyond all reasonable doubt. It will perhaps not be out of place here to indicate how the difficulty for the student arises while attempting to study the Nāṭyaśāstra. I do not think it is anywhere disputed now that the Śruti-Svara arrangement of Śāraṅgadeva is essentially the same as that expounded by Bharata."[2]

Thus we find that the Shastric rules which control the oral tradition became obsolete. The cause seems to be that in later times there came about a great disparity between the actual practice of music and the Shastric theories. The result has been that at least in the case of north Indian or Hindustani music as distinguished from Karṇāṭaka music, these old works are not of any substantial use in understanding the structure of the Rāgas.

1. Upper India Music, p. 4.
2. Comparative Study of some of the leading music systems of the 15th, 16th, 17th and 18th centuries. p. 9.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

Again to quote Pandit Bhatkhande, "It is not only true that we, in the North, have come to lose our ancient works on the science of music, but we can hardly boast of having duly preserved any of our old Sanskrit compositions either. But it may here be objected that we have even at this day some Prabandhas like those of the eminent poet and musician Jayadeva of the 12th cent. A. D. I do not deny that we have preserved these. But is that enough, having regard to the fact that, we claim to be the oldest musical nation in the world? Then again, the question will arise do we sing even one of these Prabandhas in the original Rāga and Tāla of Jayadeva? On this point the remarks of Sir william Jones will be found most interesting. He says: 'When I first read the songs of Jayadeva, who has prefixed to each of them (Prabandhas) the name of the mode in which it was anciently sung, I had hopes of procuring the original music; but the Pandits of the South referred me to those of the West and Brahmans of the West would have sent me to those of the North, while they, I mean those of Nepal and Kashmere declared that they had no ancient music, but imagined that the notes of the Gīta Govinda must exist, if anywhere, in one of the Southern provinces where the poet was born." Now, is not this really very funny having regard to the fact that Jayadeva never had anything to do with the South, he having been born in and flourished at Beerbhum in Bengal?"[1]

If this is the state of affairs about the Rāgas of Gītagovinda, can we hope to get any guidance about the musical structures of the Rāgas of Kṛṣṇagīti? This would be possible, if we can have some works which give information about the changed music of the later times.

The history of the Hindustani music is divided by Pandit V. Bhatkhande into three distinct periods, namely, 'the Hindu period, the Mahomedan period, the British period.' Each of these periods may again be sub-divided, if necessary, into two divisions: viz (1) the earlier and (2) the later. The Mahomedans came into contact with this country as a ruling nation in the 11th cent. A. D. and remained here as such till about the end of the century, after which date, the country passed under the domination of the British rulers. This historical fact enables us at once to fix the boundaries of the three periods necessary for us. The Hindu period, according to this classification begins, from the Vedic times and extends right up to the end of the 10th cent. A. D."[1]

Somanātha whom we have placed between 14th and 16th cent. A. D. can thus come in the earlier or middle part of the second or the Mahomedan

1. Upper India Music, pp. 5 3-4 respectively,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

period. In order to understand his Rāgas therefore we must, as said above, seek guidance from the works which throw light on the music current in that period.

As Pandit Bhatkhande says in his learned dissertation on a 'Comparative Study of some of the leading Music systems of the 15th, 16th, 17th & 18th centuries,' "In tracing the history of the music of northern India in Mahomedan period, the first work that forces itself on our notice is the one entitled Rāgataraṅgiṇī written by Lochanakavi. So for our purpose it would be useful to study this work which is later than Jayadeva and Vidyāpati (i. e. circa 15th cent A. D.). Thus Rāgataraṅgiṇī becomes, so to say, the first work of the second or the Mahomedan period which was a period of transition. Historians of the music of Hindustan have regarded this period as important in the development of Hindustani Music, because it was in this period that Hindustani Music was being influenced by Persian Music and on account of absence of encouragement of the Hindu Śāstras at the hands of the then Mahomedan rulers, it lost the guidance of Shastric theories."

In course of time, however, works in Sanskrit were written which attempted to give a theoretical basis for the new music.

For this puspose, we may compare the Rāgas of Somanātha with the descriptions of the same as given by Lochanakavi, and other writers of that period. But before we do that; it would be useful to know briefly the nature and the contents of Rāgataraṅgiṇī.

Pandit Bhatkhande has given a succinct account of the contents of this work in 'A Short Historical Survey of the Music of Upper India' (Page 6 onwards) and in 'A Comparative Study of some of the Leading Music systems of the 15th, 16th 17th, & 18th centuries' (Page 13 onwards), "The Rāgataraṅgiṇī purports to be a treatise on music, but 62 out of the 100 pages to which it extends are devoted to the prosody of songs composed by a poet of local fame named Vidyāpati in the Maithili dialect of the Hindi Language....Next a few lines about the elements of prosody and then the lengthy series of Vidyāpati's songs and some by the author of the treatise himself whose name is Lochanakavi. These songs are composed in metres which are given the names of the Rāgas and Rāgiṇīs.

'Rāgataraṅgiṇī mentions clearly (Page 6) Mahomedan Rāgas like Imana and Farodast" (Page 13). "A careful examination of this work yields the following six important historical points :

(1) That the names of the Swaras and Rāgas are purely northern.

(2) That the twelve Thāṭas are almost all northern.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(3) That the author used only 12 Swaras in describing his Rāgas.

(4) That many of the Rāga-lakṣaṇas in the book will be useful even now.

(5) That all music was confined to the ṣaḍja-grāma only.

(6) That the method of obtaining Rāgas from the Mūrcchanās and Jātis had become obsolete" (Upper India page 9.).

"Lochana Pandit lays down the following twelve Thātas and then classifies his 'janya' Rāgas under them :-

१ भैरवी	५ केदार	९ धनाश्री
२ तोडो	६ इमन	१० पूर्वा
३ गौरी	७ सारंग	११ मुखारी
४ कर्णाट	८ मेघ	१२ दीपक" (page 16).

About Śuddha Thāṭa of Rāgataraṅgiṇī, Pandit Bhatkhande says : "it was no other than the Kāfi Thāṭa of our current Hindustani Music. The śuddha 'ga' and śuddha. 'ni' of Lochana Pandit are the Hindusthani komal 'ga' and komal 'ni'" (Page 16).

Let us see whether we can classify some of the Rāgas given in Kṛīṣṇagīti under the Thāṭas of R. T. We can, then, turn our attention to the description of those Thāṭas and the Rāgas.

"The twelve Thāṭas of Lochana with their Swaras may be written in the terms of the Hindustani Swara names thus :

(१) भैरवी-सा. री शुद्ध. ग कोमल, म शुद्ध. प शुद्ध. ध शुद्ध, नि कोमल ।

(२) तोडी-सा, री कोमल, ग कोमल, म शुद्ध, प शुद्ध, ध कोमल, नि कोमल ।

(३) गौरी-सा, री कोमल, ग शुद्ध, म शुद्ध, प शुद्ध, घ कोमल, नि शुद्ध ।

(४) कर्णाट-सा, री शुद्ध. ग शुद्ध, म शुद्ध, प शुद्ध, ध शुद्ध, नि कोमल ।

(५) केदार-सा, री शुद्ध, ग शुद्ध. म शुद्ध, प शुद्ध, ध शुद्ध. नि शुद्ध ।

(६) इमन-सा, री शुद्ध, ग शुद्ध, म तीव्र, प शुद्ध, नि शुद्ध ।

(७) सारंग-सा, री शुद्ध, ×, म शुद्ध, & तीव्र, प शुद्ध. ×, नि कोमल & शुद्ध ।

(८) मेघ-सा, री शुद्ध, ग शुद्ध, प शुद्ध, ×, नि कोमल & शुद्ध ।

(९) पूर्वा-सा, री शुद्ध, ग शुद्ध, म तीव्र, प शुद्ध, ×, नि कोमल & शुद्ध ।

(१०) धनाश्री-सा, री कोमल, ग शुद्ध, म तीव्र, प शुद्ध, ध कोमल, नि शुद्ध ।

(११) मुखारी-सा, री शुद्ध, ग कोमल, म शुद्ध. प शुद्ध, ध कोमल, नि कोमल ।

(page 20)

(१२) दीपक-Nil."

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

Kṛṣṇagīti has in all the following fifteen Rāgas:—

कानड, गूर्जरी, केदार, विराडी, रामगिरी, सामेरी, काहली, मेवाड, श्रीराग, आसावरी, धन्याशी, सारङ्ग, देशाख्य, वसन्त and भैरव.

Of these, the following are mentioned in Rāgataraṅgiṇī:—

धनाश्री-धनाश्री.

गौरी-वसन्त, भैरव, गुर्जरी, आसावरी.

कर्णाट-कर्णाट, श्रीराग, केदार.

I cannot say how far the Rāga modes of Somanātha continue to the present day. This is a matter on which only those scholars who have a deep knowledge of the Sanskrit texts on music and the practical art of singing can throw light. Pandit Bhatkhande was such a scholar, whose works, like the लक्ष्यसंगीत in Sankrit and the voluminous commentary on the same in Marathi named हिन्दुस्तानी संगीतपद्धति, may be consulted for the purpose.

Befere concluding, I must not omit to tender my most sincere thanks to revered Āchārya Śrī Muni Jinavijayaji, the Honorary Director of Rajasthan Puratattava Mandir, Jaipur, for not only accepting this work for publication in Rajasthan Puratattva Series but also for being kind enough to spare time to go over the greater portion of the text with me and make several important suggestions which have been mostly acted upon. I must also thank Pt. K. K. Shastree for help of various kinds, Lastly I am much indebted to Prof. R. C. Parikh, my teacher in Ancient Indian Culture and guide in the preparation of my thesis for the Ph. D. degree, for giving much of his valuable time for discussing with me several problems connected with my rerearch work and especially the preparation of the present text. As Director of the Institute in which I am working, he was kind enough to get permission for me from the authorities concerned to undertake this work.

Ahmedabad

1-8-1952.

Priyabala Shah

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोमनाथकवि–विरचिता

श्री कृष्ण गी तिः ।

[१]

[1]वन्दे नन्दकिशोरस्य चरणाम्बुजमद्भुतम् ।
यद्गोपिकाकराम्भोजभासुरश्रीविवर्धनम् ॥ १

उदेतु हृदयाकाशे नन्दनन्दनचन्द्रमाः ।
विकाशयतु मच्चित्तवृत्तिकैरविणीकुलम् ॥ २

गोपस्त्रीवशकारिणी शशधरज्योत्स्नातिरस्कारिणी
सर्वामङ्गलहारिणी स्मररसप्रख्यातिसञ्चारिणी ।
राधाजीवितधारिणी व्रजकुलस्यानन्दविस्तारिणी
हासश्रीर्व्रजसुन्दरस्य विशदा भूयान्मम श्रेयसे ॥ ३

श्रीराधिकानवलकेलिवशीकृतस्य
कृष्णस्य गीतमिदमद्भुतभावपूर्णम् ।
कृष्णांह्रिपद्ममकरन्दलिहां नरागा-
मानन्दनाय कुरुते द्विजसोमनाथः ॥ ४

जयदेवकृताविवात्र मे न गुणा यद्यपि नैव चातुरी ।
तदपि व्रजनाथकीर्तने विदुषो न प्रतिभाति मूकता ॥ ५

कानड–रागेण गीयते ॥ १ ॥

जय जय राधिकारमणीय ।
कुञ्जनाथ कलेश केशव कामिनीकमनीय ॥ ध्रु० १

माधव व्रजनाथ वल्लववल्लभासुरतेश ।
भङ्गुरभ्रुकुटीतटप्रकटीकृतस्मरवेश ॥ २

मीनकुण्डलमण्डिताननखण्डिताधर धीर ।
नीलरत्ननवीननीरदराजमानशरीर ॥ ३

1 Ms begins: श्रीगणेशाय नमः । श्रीगोपालाय नमः ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वल्लवीमुखचन्द्रचुम्बनलुब्धदृष्टिचकोर ।
मानिनीरतिकन्द मानद वन्द्य नन्दकिशोर ॥ ४
गोकुलेश गुणज्ञ गोधनचारणप्रिय देव ।
गोपिकागणगीतगौरव नागरीकृतसेव ॥ ५
रासनर्तित[1]नायिकारतसङ्गरङ्गनिधान ।
शालपल्लवपाणिपल्लवगीतनृत्यनिदान ॥ ६
वेणुनादविमोहितव्रजकुञ्जसद्मनिवास ।
पङ्कजायतमत्तलोचन कुन्दसुन्दरहास ॥ ७
सोमनाथसुखाय संप्रति कृष्णगीतमिदम् ।
गीयतामनिशं जना भवपापतापभिदम् ॥ ८ । १

[इति प्रथमाष्टपदी]

[२]

वनावलिविलासिनं सरसराधिकालासिनं
निकुञ्जगृहवासिनं व्रजकुलाम्बुजोद्भासिनम् ।
शशाङ्कसितहासिनं तरुणयोषिदुल्लासिनं
पुमांसमनुदासिनं स्मरत मेघसंकाशिनम् ॥ १
सुस्निग्धान्यवधूभुजान्तरगतं पीताधरं सादरं
भ्रूचापच्युतवक्रवीक्षणशरव्याधूतधैर्यं प्रियम् ।
सा स्वप्ने सुदती विलोक्य रुदती तेन प्रियप्रेयसी
कान्तेन प्रतिबोधितापि विदधे मानं मनोहारिणी ॥ २
प्रणयविनयवाक्यान्याह गोविन्ददूती
मदनदहनमुग्धस्वान्तकान्तं निरीक्ष्य ।
कृततरणितनूजातीरवानीरवासां
विरहहतविलासां राधिकां बोधयन्ती ॥ ३
मानं मा कुरु माधवे सखि तवात्यन्तानुकूले प्रिये
दोषं स्वप्नदशानुभूतमदधस्त्वं वल्लभे तन्मृषा ।
कृष्णस्ते नवकुञ्जकेलिभवने तिष्ठत्यनङ्गाकुल-
स्तत् संभावय भावगर्भितगिरा गौराङ्गि किं कुप्यसि ॥ ४

---

1 Ms नायका°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गूर्जरी-रागेण गीयते ॥ २ ॥

किं सहसे मदनानलदाहम् ।
तव चरणौ प्रणमामि सदाऽहम् ॥ १
राधे माधवमनुसर धीरम् ।
किं कृशयसि विरहेण शरीरम् ॥ ध्रु० ॥
नानाजनितसुरतरसरङ्गम् ।
मा परिहर वल्लवपतिसङ्गम् ॥ २
पश्यसि किं न सखीजनवदनम् ।
हरिणा सह परिभावय वदनम् ॥ ३
किं कुरुषे पुरुषे बहुमानम् ।
वाञ्छसि यदि माधवमुखपानम् ॥ ४
त्वमसि सकलतरुणीजनरत्नम् ।
स बहु करोति कृते तव यत्नम् ॥ ५
चलसि न किं मधुसूदनगेहम् ।
कलयसि किं विकलं निजदेहम् ॥ ६
अनुनय विनयगिरा तमुदारम् ।
अपनय मदनदुरन्तविकारम् ॥ ७
सोमनाथवर्णितहरिचरितम् ।
येन विनश्यति कलिमलचरितम् ॥ ८।२

[इति द्वितीयाष्टपदी]

[३]

आस्यं हास्यवियोगि भोगिलतिकालावण्यहीनोऽधरो
नो भाले तिलकोऽलकोऽप्यललितो लुप्ताञ्जने लोचने ।
वासस्ते मलिनं तनुस्तनुरियं वक्षोऽपि निर्भूषणं
तन्मे मानिनि शंस पश्यसि पुनर्माने कृते किं फलम् ॥ १
[1]मुखे मानं ध्यानं हृदि रसनिधेरेव दधतीं
सदानन्दां नन्दात्मजचरितचिन्तां प्रियतमाम् ।
स्वयं नैवायान्तीं तदतिगुरुमानक्षतिभयात्
सखी राधां काचिन्मदनकृतबाधामिति जगौ ॥ २

1 Ms सु°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केदार-रागेण ॥ ३ ॥

शमय मनोभवजनितविकारम् ।
सुखमनुभव सुन्दरि भवसारम् ॥ १

चल सखि कुरु हरिणा सह सङ्गम् ।
जनयसि किं न मनसि बहुरङ्गम् ॥ ध्रु०

वृथा वहसि नवयौवनभारम् ।
कलयति यावदसौ न विहारम् ॥ २

हरिरपि तव कुरुते सखि मानम् ।
रचय रुचिरनयने शुभयानम् ॥ ३

तव विरहानलदुःखितदेहम् ।
व्यथयति विधुरपि परिहृतगेहम् ॥ ४

सेवय विविधरसैरिह कृष्णम् ।
नवशृङ्गाररसुधारसतृष्णम् ॥ ५

किमिति तनूकुरुषे तनुमेताम् ।
सुरतविहितरसभावसमेताम् ॥ ६

राजसि किमिति न [1]रमणसमीपे ।
रमय वने बहुकुसुमितनीपे ॥ ७

जनयतु वल्लवयुवतीगीतम् ।
सोमनाथहृदि सुखमुपगीतम् ॥ ८ । ३

[इति तृतीयाष्टपदी]

[४]

शृङ्गारी तव कुञ्जकेलिरसिको रम्यं वयस्तेऽधुना
धैर्यध्वंसि धनुर्दधाति नियतं मीनध्वजो देहिनाम् ।
माने मुञ्चसि नाग्रहं न च वचो धत्से मदीयं हृदि
त्वं प्रेष्ठा तव वल्लभः स भविता क्लेशैकभाजो वयम् ॥ १

1 Ms रमणी°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राधासखी माधवमम्बुजाक्षमुवाच काचिन्मधुरं मृगाक्षी ।
मृगीदृशः कामकठोरबाणव्यथाकुलाया उपतापशान्त्यै ॥ २

राधासखीं समादाय चलिता कृष्णदूतिका ।
तन्मुखेनैव तत्सख्या अवस्थां निजगाद सा ॥ ३

गूर्जरी–रागेण ॥ ४ ॥

बहु विलपति विरहे तव राधा
मदनबाणकृतबहुविधबाधा । १

केशव किं चिरयसि चल कुञ्जम् ।
मुञ्चति कुसुमशरः शरपुञ्जम् ॥ ध्रुवं ॥

इच्छति तव मधुराधरपानम् ।
सा विदधाति मनसि बहुमानम् ॥ २

ध्यायति तव मृदुवदनसरोजम् ।
शमयति मनसि न तेन मनोजम् ॥ ३

पश्यति तव हृदयागतरूपम् ।
युवतीजनमनसामनुरूपम् ॥ ४

मञ्जुलवञ्जुलविहितनिवासा ।
माधव विरहगतस्मितहासा ॥ ५

गच्छति घनवनयमुनातीरम् ।
रहसि विमुञ्चति लोचननीरम् ॥ ६

किं कथयामि तरुण बहुवादम् ।
गमयतु तरुणीचित्तविषादम् ॥ ७

सेवकसोमनाथकृतगीतम् ।
जनयतु रसिकसुखं सदधीतम् ॥ ८।४

[इति चतुर्थ्यष्टपदी]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[५]

शीतांशुस्तपनत्यरण्यति गृहं हालाहलत्यम्बुजम्
हारः सर्पति चन्दनं दहनति स्फीता कथा वज्रति ।
रात्रिः कल्पति चक्षुरभ्रति पिकक्वाणोऽपि बाणात्ययं
कामः कालति कृष्ण किं न कुरुषे कामं कुरङ्गीदृशः ॥ १

व्रजकुलतिलकं विषादभाजं
व्रजरमणीरमणीयकेलिगेहे ।
प्रियचतुरवचो विचित्रयुक्त्या
पुनरपि किञ्चिदुवाच गोपराजम् ॥ २

तदवस्थां समाख्याय पुनर्गीतेन माधवम् ।
बोधयन्ती सखी प्राह राधाबाधापनुत्तये ॥ ३

विराडी-रामगिरी-रागेण ॥ ५ ॥

अनिशं निशि कुरुते जागरणम् ।
त्वामतिहाय न किञ्चन शरणम् ॥ १
राधा तव विरहाकुलचित्ता ।
माधव मधुरिमपरिहृतचित्ता ॥ ध्रु० ॥
कथयति केशव तव बहु नाम ।
त्यजति तवैव कृते निजधाम ॥ २
कामबाणकृतविकलशरीरा ।
मुञ्चति लोचननीरमधीरा ॥ ३
त्वदधरमधुरपानकृतलोभा ।
चिरवियोगविगलिततनुशोभा ॥ ४
मदनजालमिव कलयति मालाम् ।
सुखय सदा करुणामय बालाम् ॥ ५
ध्यायति तव मुखपङ्कजरागम् ।
हृदि विदधासि न कथमनुरागम् ॥ ६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अगणितवैभवभूपितगेहा ।
गुणवति भवति समर्पितदेहा ॥ ७

इति कृतसोमनाथरसरचनम् ।
सुखयतु जनमबलाकुलवचनम् ॥ ८।५

[इति पञ्चम्यष्टपदी]

[६]

इत्याभीरशिरोमणिं प्रति सखी संप्रोच्य वाचं शुभा-
मायाता पुनरन्तिके मृगदृशो भास्वत्तनूजातटे ।
श्रीमन्नन्दकुमारकामकठिनावस्थां विलोक्य प्रियां
प्रत्याह प्रियकोमलाक्षरवतीं वाणीं विदग्धोचिताम् ॥ १

कामाकुलो जपति नाम तवैव राधे
गन्तुं न पारयति ते कुटिलभ्रु भीत्या ।
नो चन्दने न कमले न च शीतरश्मौ
दृष्टिं ददाति दयितस्तव तन्वि तापात् ॥ २

त्वद्वेणीसदृशं बिभर्ति शिरसा प्रीत्यैव पिच्छं प्रिये
तन्वि त्वद्वदनानुकारिकमलं धत्ते कथञ्चित् करे ।
कण्ठक्वाणसमस्वरा मुरलिका तेनाधरे स्थाप्यते
मुग्धे त्वत्करकोमलं द्युतिधरं कर्णे कृतं पल्लवम् ॥ ३

स्वर्णे विद्युति कुङ्कुमे कुरबके पीतांशुके चम्पके
किञ्जल्के कमलस्य [1]नूत्नरजनीखण्डे नखोल्लेखिते ।
सारूप्यं तव पीतवंशकुसुमे किञ्चिद् विलोक्याबले
तिष्ठेत् सुन्दरि निर्भरस्मरमदोन्मादेन मत्तो हरिः ॥ ४

1 Ms नुत्नरजनी°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सामेरी-रागेण गीयते ॥ ६ ॥

कलितललितस्वरश्रुतिवेणुमोहिता
का न कामिनि कुलं त्यजति नारी ।
मानयिष्यति मृदुलवचनस्वनो हरिः
त्वामयं तन्वि गिरिराजधारी ॥ १

कलय राधिके मदनगोपालसङ्गम् ।
सुरतरसकेलिकुतुकेन जनयिष्यति
स्फुटमसौ सुतनु ते मनसि रङ्गम् ॥ ध्रु० ॥

त्वमसि वरवर्णिनी सोऽपि वपुषः
श्रिया शोभते समुचितमेतदुभयम् ।
कम्पसे किमिति सखि रसिकवरसङ्गमे
जनय भामिनि मनो मैव सभयम् ॥ २

नन्दनन्दमनिन्दितरुचिरचातुरी
सुन्दरं रमय मन्मथविलासैः ।
शमय सुन्दरि कुसुमचापशरजव्यथां
रचय सुन्दरकथा विशदहासैः ॥ ३

घनतमसि कानने वसति कमलानने
किमु विलम्बनमिदं तव विधेयम् ।
अतिचपलचारुकुटिलभ्रुकुटिनर्त्तने
तमिह सुभगे करिष्यसि विधेयम् ॥ ४

अङ्गसङ्गमसुखं तरुणि करुणा-
मयस्तेऽभिलष्यति लतासद्मवासी ।
चल मलयसौरभे वहति पवने वने
रमणि यमुनातटे नवविलासी ॥ ५

मण्डनं तव सहजलावण्यखण्डनं
किमिति विदधासि भवरत्नरूपे ।
त्वरय कामाकुले चतुरचूडामणौ
सानुकम्पा भवाभीरभूपे ॥ ६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्वं भविष्यसि सकलयुवतिवरपूजिता
दत्तचित्ता सती गोपिनाथे ।
लोकलोचनसुखददेहमोहितजने
पावनेऽमरनिकरगीतगाथे ॥ ७

[1]इयमुदितदूतिकाविनयवचनावली
राधिकामनसि मोदं दधाना ।
सोमनाथे सदा भवतु सुखदायिनी
कामकौतुकरसानां ददाना ॥ ८।६

[इति षष्ठ्यष्टपदी]

[७]

इति श्रुत्वा सख्याः प्रियमधुरवाक्यानि युवति-
विकारं कामोत्थं प्रशमयितुकामाऽलसगतिः[2] ।
प्रसादं कर्तुं सा सुरतरसदानैर्व्रजपते-
श्चचाल प्रोत्तुङ्गस्तनभरवती चारु निलयम् ॥ १

क्वचिच्चलति सत्वरं क्वचन मन्थरं मानिनी
क्वचित् तरुषु लीयते क्वचिदितः परावर्तते ।
क्वचिच्चकितमीक्षणं क्षिपति दिक्षु भीतेव सा
करोति न कलक्वणं क्वचन कर्णयोः कोकिलम् ॥ २

केदाररागेण ॥ ७ ॥

राधा हरिभवनं प्रति वलिता ।
शशिवदना मदनालसगमना वचनारतिललिता ॥ ध्रु०
कुसुमकदम्बकलितकबरीभरविलसदनङ्गतरङ्गा ।
कामविजयपरमेव विराजितलोचनभृतरततरङ्गा ॥ १
कुचतटनिकटलसिततरलावलिरलिकतिलककृतशोभा ।
कटिपट्टरटितरुचिररशनागुणवर्द्धितनिधुवनलोभा ॥ २

1 Ms इद°. 2 Ms कामालसतिः.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

पदकमलोपरिनादितनूपुरमधुरमधुव्रतमाला ।
मधुरिमसकलधुराधरणोचितविरचितभूषणजाला ॥ ३
रतिरसरसिकशिरोमणिना सह सा शय्यामधिशयिता ।
व्रजकुलतिलकविहितपरिरम्भणपरिभविताखिलदयिता ॥ ४
हठकृतमुखचुम्बनकरजक्षतकम्पितपाणिकिशलया ।
प्रमुदितपिकपारापतकूजितमिश्रितसस्वनवलया ॥ ५
सा कुरुते निजकञ्चुकमोचनचटुलरमणकररोधम् ।
पालयतीव पयोधरयुगलं शरणागतमिव योधम् ॥ ६
सापि निपीय सरसकृष्णाधरमादकमधुरसमत्ता ।
इति न च वेद काहमयमपि को रतये तनुरपि दत्ता ॥ ७
सोमनाथसेवकमुखनिःसृतराधाकृष्णविनोदम् ।
शृणुत तदिह विबुधा यदि सुन्दरमिच्छथ निजहृदि मोदम् ॥ ८।७

[इति सप्तम्यष्टपदी]

[८]

घटयति भुजबन्धं निर्भरालिङ्गनार्थं
तदधरमधु पीत्वा प्रेमभावं व्यनक्ति ।
जनयति रदखण्डं पण्डिता कामशास्त्रे
वशयति पतिचेतश्चेतनीकृत्य कामम् ॥ १
रमयति स्म मनोभवपीडिता
व्रजपतिं वनिता मणिमण्डिता ।
विविधकामकलाकुशला रतिं
जितवती निजदेहजसौष्ठवैः ॥ २

गूर्जरीरागेण काहलिरागेण वा ॥ ८ ॥

रमयति राधा नन्दकुमारम् ।
नवनिकुञ्जभवने मृदुपवने नानाविहितविहारम् ॥ ध्रु०
आलिङ्गति चुम्बति करजक्षतमर्पयति प्रियदेहे ।
बोधयतीव मदनमदमद्भुतकेलिकलागुणगेहे ॥ १

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संभ्रमचलितललितभृकुटीगतिरतिनिपुणा रतिरङ्गे ।
व्रजभूषणवक्षसि वरतरुणी राजति गुणगणसङ्गे ॥ २
श्रमशीकरशोभितमुखपङ्कजचपलालकमधुपाली ।
पिबति मधुरमधरं व्रजरमणी तदधरमपि वनमाली ॥ ३
विलसति नीलगिरेरुपरिस्था कनकलतेव सकम्पा ।
तन्वी निजलावण्यतिरस्कृतसजलजलदगतशम्पा ॥ ४
रतिसमयोचितविरचितमृदुतरवचनावलिरनुकूला ।
निधुवनरभसगलितकबरीभरकल्पितनीलदुकूला ॥ ५
लोचनयुगलममीलि विशालमलोपि विशेषकचित्रम् ।
परिरम्भणशिथिलितभुजवल्लीहृदयमकम्पि विचित्रम् ॥ ६
अतिमन्दीकृतजितकदलीरुचिरुचिरघनस्थलली ला ।
मधुमथनप्रियसरसरसाकुलपुरुषायितरतशीला ॥ ७
इति नवरङ्गसङ्गसुखवर्णनमधिकविनादरसालम् ।
सोमनाथहृदि जनयतु संप्रति शातमतीव विशालम् ॥ ८।८

[इत्यष्टम्यष्टपदी]

[९]

विचलदलकमालालोलताटङ्कशोभा
निजरवजितनृत्यन्मत्तपारापता सा ।
घनजघनकुचान्तः कृष्णमापीड्य रेमे
रणति जयमिवास्याः कान्तकाञ्चीकलापः ॥ १
गलन्मुक्तामालं शिथिलनयनं लुप्ततिलकं
श्रमादम्भोविन्दुप्रसररससंकीर्णचिकुरम् ।
अतिक्षामालापं [1]मधुरिमधुराधारविदनं
रतान्ते तद्रूपं तदतिरमणीयं मृगदृशः ॥ २
विहरति वरवर्णिनी निकुञ्जे ललितलतातरुणप्रसूनपुञ्जे ।
नवलरसवशीकृतेन पत्या समुदितमारमनोरथेन रत्या ॥ ३

1 Ms °भ्रकुटी°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रामगिरीरागेण ॥ ९ ॥

विहरति ललितलताकृतभवने ।
व्रजदयिता दयिताननचुम्बनचारुतरा मृदुपवने ॥ ध्रु० १
रुचिरकुसुमकोमलदलपल्लवपरिकल्पितशुभशयने ।
स्थितवति रतिरमणीयतरे रमणे जितपङ्कजनयने ॥ २
सुरतकलाकौतुककलिताकलिता कुरुते रतिरासम् ।
हरिरपि बन्धविशेषरसैरधिकं तनुते स विलासम् ॥ ३
क्वचिदुत्सङ्गनिवेशितया स तया विलसति रतिकारी ।
राशीकृतमरकतमणिमध्यसुवर्णलतारुचिहारी ॥ ४
कुटिलभ्रुकुटिकोदण्डविनिःसृतपञ्चशराशुगभीतम् ।
मृगमिव सा विवशीकुरुते रमण प्रकटितरतिगीतम् ॥ ५
तरलालककुलकलितमनोहरवदनविलज्जितचन्द्रा ।
अतिरसरभसपरा परिखेलति जनितविलोचनतन्द्रा ॥ ६
उपरि विलासवती भवती भवतीव कलाकुशला सा ।
जनयति कं न रसं पतिरेवं वदति परिस्फुटहासा ॥ ७
नवनवकुञ्जविलासभरेण वशीकृतनन्दकुमारम् ।
जनयतु वरतरुणीरतिरमितं सोमनाथसुखसारम् ॥ ८।९

[इति नवम्यष्टपदी]

[१०]

भ्रुवौ कोदण्डः किं दृगियमतिलोला किमिषवः
कुचद्वन्द्वं चैतत् किमिति करिकुम्भस्थलयुगम् ।
असौ निःश्वासः किं रसति रशना कामनृपतेः
चमूर्नेयं राधेत्यतिचकितचित्तोऽवतु हरिः ॥ ९
प्रत्यङ्गवर्णनमिषेण विलासवत्याः
संभाव्य कामनृपतेः पृतनां मुरारिः ।
इच्छन्नभीरुरपि भीरुरिव प्रसादं
संभोगयोगरुचिरं निजगाद राधाम् ॥ २

1 Ms. मधुरिपुमधुराधारि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रामगिरीरागेण गीयते । मेवाडरागेण वा ॥ १० ॥

राधे वशयसि मामधिकम् ।

त्वमसि विदग्धतरा वरसुरते जनयसि निरवधिकम् ॥ ध्रु० १

त्रिजगति रतिकौशलवति रसिका युवती का मधुरा ।

त्वयि नवकुञ्जविहारिणि विलसति संप्रति कामधुरा ॥ २

धनुरिव भ्रुकुटियुगं तव भामिनि वक्रिमसौभगसारम् ।

शितशरनिकर इव स्फुटशोभननयनमिदं चलतारम् ॥ ३

द्विरदकुम्भकमनीयतरं हृदि वहसि पयोधरभारम् ।

स्थितमवमत्य नृपस्मरसमरे शृणिसमनखप्रहारम् ॥ ४

दुन्दुभिरिव रशना तनुते तव गुरुगम्भीरनिनादम् ॥

को विदधाति वरोरु भवत्या सह रणरङ्गविवादम् ॥ ५

उद्भटमल्लचमूरिव राजति भवती भावविमिश्रा ।

तव संगमसुखहेतुरियं मम मुदमुद्वहति तमिस्रा[1] ॥ ६

कलय वलयरञ्जितकरकमले मदुपरि भावविनोदम् ।

मामनुचरमिव मानिनि मानय नय चेतो मम मोदम् ॥ ७

व्रजपतिरचितरुचिरवचनावलिजनितमनोजविलासा ।

सोमनाथसेवकसुखदा सा भवतु विशदरुचिहासा ॥ ८ । १०

[इति दशम्यष्टपदी]

[११]

मन्मथविलासकारी सरसवचोभिर्विलासिनीवदनम् ।

वर्णयति भूरिभावैर्व्रजरमणीरमणीयकामपूरः ॥ १

श्रीरागेण आसाउरीरागेण वा गीयते ॥ ११ ॥

मदयति मम चेतस्तव वदनम् ।

शरदि विशदसरसिजमिव मानिनि निरुपममधुरिमसदनम् ॥ ध्रु० १

खञ्जनमदभञ्जनरतिरञ्जितलोचनरचितविलासम् ।

अलघुललितलावण्यविमिश्रितकोटिसुधासमहासम् ॥ २

विमलदशनकिरणावलिदारितमन्मथतिमिरसमूहम् ।

जनयति कस्य न मनसि विहारिणि शशधरविषयक[2]मूहम् ॥ ३

1 Ms तमिश्रा. Ms 2 °विषयिक°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुभगविशालभालभुवि वर्तुलतिलककमुज्ज्वलशोभम् ।
शशिनि शशभ्रमदायिविशेषकलोकनवर्द्धितलोभम् ॥ ४

बिम्बाधरनिःसरदमृतद्रवविद्रावितरतिखेदम् ।
चुम्बनचारुनिषेधविधावधिकं भ्रुकुटीभृतभेदम् ॥ ५

अगणितगुणगौरवगुम्फितमिदमद्भुतकेलिकलापम् ।
पारापतप्रतिवादकमादकमृदुतरमधुरालापम् ॥ ६

कुङ्कुमरसरञ्जितमङ्गलमयपत्रविचित्रकपोलम् ।
सुरतविनोदकृते कुरुते मम हृदयमतीवविलोलम् ॥ ७

सोमनाथविभुना रचिता रुचिरा वचनावलिरेषा ।
रसिकजनेषु मुदं तनुतामतिमञ्जुलभावविशेषा ॥ ८।११

[इत्येकादश्यष्टपदी]

[१२]

अधरमधुसुधारसास्पदेन द्विजकिरणावलिदीर्घचन्द्रिकेण ।
मृगमदतिलकाङ्किना विना मे तव मुखचन्द्रमसा किमन्यदिष्टम् ॥ १

इयमधिकमनोज्ञा कामिनी चन्द्रचूडा-
मणिरहमपि लीलाक्रीत एवाऽनयाऽस्मि ।
इति निजवशगत्वं द्योतयन्नाह नारी-
नयननलिनपीतः पीतवासा मुकुन्दः ॥ २

धन्याशीरागेण गीयते ॥ १२ ॥

राजते तरुणि तव तारुण्यलीला ।
विविधरसरङ्गरञ्जितसुरतकौतुके
कोटिमन्मथमथनमाधुर्यशीला ॥ ध्रु० १

कुसुमचयचित्रचुम्बितचिकुरचामरं
चपलयति चेत एतन्मदीयम् ।
श्रवणपुटपुरटताटङ्करुचिरं [1]चलं
हन्ति मामपि त्वदीयम्[2] ॥ २

---

1 Ms चले. 2 Ms तदीयम्.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुमुखि तव लोचनं कञ्जमदमोचनं
चुम्बने कं न भावयति भावम् ।
इयमधरमाधुरी रहसि पीता सती
नाशयति दुःसहं मदनदावम् ॥ ३
जितकण्ठकलकण्ठि नेतिनेति च वच-
स्तन्वि पोपयति पीयूषधर्षम् ।
स्निग्धकज्जलबिन्दुरिन्दुमुखि वर्धयति
चारुचिबुके कृतो मनसि हर्षम् ॥ ४
सुभगभुजवल्लिकागाढपरिरम्भणं
मामवति कामसंग्रामकाले ।
उच्चकुचरोचिरञ्चितमुरो मामकं
मारयति पुष्पधन्वा न बाले ॥ ५
नाभिगम्भीरसरसीतटे मेखला-
सारसी रटति सौरतविलासम् ।
दलितकलधौतकदलीजघनमण्डली
मामसौ सुदति विदधाति दासम् ॥ ६
मञ्जुमञ्जीरधीरध्वनितबन्धुरं
चटुलचरणद्वयं जितमरालम् ।
वसति मम मानसे सुखदनखचन्द्रिका
खण्डते[1] तन्वि तिमिरं करालम् ॥ ७
इति कुञ्जकेलिकमनीयमुखनिःसृतं
वल्लवीदेहवर्णनविशेषम् ।
सोमनाथे सदा शुभदमिदमस्तु तद्-
वचनरचनं कथितरूपरेखम् ॥ ८।१२

[इति द्वादश्यष्टपदी]

[१३]

ददस्व परिरम्भणं तरुणि पायय स्वाधरं
विनोदय कुचौ रुचा कनककोककान्ती इमौ ।

1 Ms °ति.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रिये क्वणय किङ्किणीं जघनदर्शनं देहि मे
हृदि [1]स्वपदमर्पय प्रिय इति प्रियामुक्तवान् ॥

राग आसाउरी ॥ १३ ॥

राधे विरचय मयि रतिरङ्गम् ।
सुतनु सुतनुपरिरम्भणकर्मणि चटुलकुटिलभ्रूभङ्गम् ॥ ध्रु० १
पायय पिब मानिनि मधुराधरमधुमादकमतिमिष्टम् ।
मधुरिमकृतपीयूषपराभवमगणितमणितविशिष्टम् ॥ २
मदुरसि सरसि विनोदय सुन्दरि कुङ्कुमरुचिकुचकोकौ ।
परिमोचय कञ्चुकपञ्जरतः कुरु कुतुकेन विशोकौ ॥ ३
रुचिकरचपलविलोचनचुम्बनचारुतरापरशोभम् ।
किं कुरुषे पुरु खेलनकारिणि मानविवर्द्धितलोभम् ॥ ४
मुखरय मुषितमृगीगणदृष्टे पटुमेखलाकलापम् ।
दूरीकुरु करभोरु कृशोदरि मनसि मदनपरितापम् ॥ ५
कामकनकसिंहासनमिव मे दर्शय जघनमुदारम् ।
सफलय मम नयने वरवर्णिनि निधुवनवैभवसारम् ॥ ६
यावकरसरञ्जितमिदमर्पय मम हृदि चरणसरोजम् ।
शमय विषमविलोचनलोचनपावकदग्धमनोजम् ॥ ७
इति नवकुञ्जरसप्रियभाषितमद्भुतवचनविमिश्रम् ।
सोमनाथहृदि हरतु जगन्मथमन्मथमोहतमिस्रम्[2] ॥ ८।१३

[इति त्रयोदश्यष्टपदी]

[१४]

यद्वाचो हिमशीतला हिमकराकारानुकारं मुखं
यत्पाणी कमलश्रियौ विहसितालोकः सुधामन्दिरम् ।
यच्चेष्टा व्रजपालबालवनितामिष्टा सदेष्टः सता-
माविर्भूय मुदं ददातु हृदि मे सः श्रीयशोदासुतः ॥ १
अतिकामितया तयानुरक्तः कुरुते तद्गुणगौरवस्तवं सः ।
कथयन्नुपमानमानताङ्ग्या व्रजनाथो निजयोग्यतां च शंसन् ॥ २

1 Ms स्वपपद°. 2 Ms °श्र.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कनडु ॥ १४ ॥

दिशि दिशि सुभ्रु ते [1]सुषमा ।
गीयते सखि दीयते नरकिन्नरैरुपमा ॥ ध्रु० १

त्वं प्रिये चपलाहमस्मि घनो घनोरु वरः ।
त्वं लता ललिताहमस्मि तमालनीलतरः ॥ २

त्वं मनोजतरङ्गिणी जलधिस्तवाभिमतः ।
त्वं यदा नलिनी तदाहमलिर्मरन्दरतः ॥ ३

त्वं समा कलधौतकोमललेखयासि यदा ।
गण्यते निकषोपमा ममापि तन्वि तदा ॥ ४

त्वं यदा सरसीव भासि रते रसालतया ।
कल्पितोऽहमिहानुरागिणि तन्मरालतया ॥ ५

त्वं यदा मदविह्वला करिणीव कुञ्जरता ।
जायते मयि चारुहासिनि मत्तकुञ्जरता ॥ ६

त्वं यदा हरिणीव चञ्चललोचना सुरते ।
कृष्णसारसमानता मयि संम्मता नु रते ॥ ७

राधिकागुणगौरवस्तुतये हरेरुदितम् ।
सोमनाथजने सदा कुरुतादिदं मुदितम् ॥ ८।१४

[इति चतुर्दश्यष्टपदी]

[१५]

त्वं विद्युज्जलदोऽहमस्मि भवती वल्ली तमालोऽस्म्यहं
त्वं शृङ्गारतरङ्गिणी यदि तदा वारांनिधिः सोऽस्म्यहम् ।
त्वं चेत् त्पङ्कजिनी तदाहमलिराट् त्वं स्वर्णरेखा यदा
सोऽहं स्यां निकषस्तदा समुचिता शोभा द्वयोरावयोः ॥ १

राधासखी वर्णयति स्वरूपं वृन्दावनाधीशमनोऽनुरूपम् ।
प्रियस्वसख्यै परितुष्टचित्ता परस्परालापविशिष्टचित्ता ॥ २

1 Ms सुखमा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रामगिरी-सारङ्गदेशाखैर्गीयते ॥ १५ ॥

कामवामरसे ।
राजति राधा नवलवशे ॥ ध्रु० १
कुञ्जतले नवपल्लवतल्पे ।
मुदितमधुव्रतकोकिलजल्पे ॥ २
रचितविशेषकचित्रविशेषा ।
कलितविलोचनकज्जलरेषा ॥ ३
चलकुण्डलमण्डितमुखचन्द्रा ।
नयनस्थितसुन्दररसतन्द्रा ॥ ४
विकचकुसुमगुम्फितकचभारा ।
उरसि मनोरममणिमयहारा ॥ ५
कुङ्कुमरसरञ्जिततनुवल्ली ।
भाति कुचोपरि मञ्जुलमल्ली ॥ ६
मेचकमणिकल्पितकरवलया ।
निपुणतरा सुरते नवकलया ॥ ७
सोमनाथसेवककृतगानम् ।
रसिकजने कुरुतां सुखदानम् ॥ ८ । १५

[इति पञ्चदश्यष्टपदी]

[१६]

पुन्नागनागनवचम्पकजातियूथी-
मालत्यशोकमधुमत्तमधुव्रताढ्ये ।
वृन्दावने नवनिकुञ्जतले तरुण्या
भेजे हरिर्मदनकेलिरसं वसन्ते ॥ १

वसन्तरागेण ॥ १६ ॥

रमते हरिरिह रुचिरनिकुञ्जे ।
कुसुमितकुञ्ज[1]कुटिरतरुमण्डलमण्डितमण्डपपुञ्जे ॥ ध्रु० १

---

1 Ms 'कुटीर'.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कुरबककरुणकदम्बकदलिकाशोकरसालसमेते ।
विदधति युवतिजनेषु मनोरममदनरसालसमेते ॥ २

विकचबकुलकलिकामञ्जुलमधुमत्तमधुव्रतमाले ।
कोकिलकुलकोलाहलकम्पितपल्लवतालतमाले ॥ ३

स्पृशति कुचौ मधुरं तदधरमधु पिबति निकुञ्जविहारी ।
सापि ललाटपटलपरिनर्तितभृकुटि[1]नटी नवनारी ॥ ४

व्रजपतिविहितविशददशनव्रणपीडनमक्षममाना ।
कुप्यति वदति जहीहि जहीहि करावपि कम्पयमाना ॥ ५

श्लथयति कटितटरुचिररशना[2]गुणगुम्फितनीवि[3]निबन्धम् ।
नहि नहि वचनममृतमिव रचयति जनयति निजभुजबन्धम् ॥ ६

हृतवति घनजघनावरणं रमणे[4] प्रतिनिर्मितहासा ।
नर्तनमिव कुरुते सुरतेषु कटीविपटी सविलासा ॥ ७

सोमनाथसेवकमुखनिःसृतमुभयकिशोरचरित्रम् ।
कुटिलकामकलुषं जनमेतदिदं विदधातु पवित्रम् ॥ ८।१६

[इति षोडश्यष्टपदी]

[१७]

म्लिष्टाधरारुणिमशोणिमचारुचक्षुः
सस्वेदबिन्दुवदनं शिथिलालकश्रि[5] ।
क्षामाक्षरं पुलकवेपथुपूर्णगात्रं
रूपं तथापि रुचये सखि पङ्कजाक्ष्याः ॥ १

देशाखरागेण भैरवरागेण वा ॥ १७ ॥

अद्भुतशोभा रजनिविरामे ।
सखि संप्रति राधिकाशरीरे निजपतिपूरितकामे ॥ ध्रु० १

गलिताधरशोणिमशिथिलालकशोभितवदनसरोजे ।
मुकुलितलोचनचुम्बनलम्बितकज्जलमुदितमनोजे ॥ २

---

1 Ms °भृकुटी°. 2 Ms °रसना°. 3 Ms °नीवी°. 4 Ms रमणं. 5 Ms °कश्रीः

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मृगमदलिखितविचित्रचित्ररुचिकुचतटनखप्रहारे ।
भुजपरिरम्भविमर्दविखण्डितमुक्तामणिमयहारे ॥ ३

श्रमजलविपुलपुलकपृथुवेपथुविस्मृतविरलाभरणे ।
कटिविघटितमृदु[1]वररशनागुणपरिह्वितजघनावरणे ॥ ४

अतिरुचिरुचिकरलम्भितनीवीदर्शनधर्षितरमणे ।
मन्थरचरणविहारविनिर्जितमदवारणवरगमणे ॥ ५

दुस्तरतरमन्मथसङ्गरजितवरवृन्दावननाथे ।
नवनिकुञ्जमधुकरगुञ्जारवनिगदितगुणगणगाथे ॥ ६

चलकुण्डलमर्दितगण्डस्थलचित्रितमकरीमुद्रे ।
विविधनिखिलशौरतरसपोतक[2]तोषितसुरतसमुद्रे ॥ ७

सोमनाथसेवकवर्णितमिति रतवल्लवीविनोदम् ।
शृणुत सकलकलिकालिमहारि भक्तमनःकृतमादम् ॥ ८।१७

| इति सप्तदश्यष्टपदी]

[१८]

पुष्पाणि मे रचय केशव केशभारे
हारेण रोचय कुचौ तिलकेन भालम् ।
नेत्रेऽञ्जनं कुरु कपोलतलेऽपि चित्रं
कृष्णं जगाद मृगशावविलोचनेति ॥ १

रामगिरीरागेण ॥ १८ ॥

वदति प्रिया सुरतेन तेन वशीकृते रमणे ।
केलिकौतुककौशलैरतनुव्यथाशमने ॥ ध्रु० १

कुसुमानि मे कवरीभरे रचय प्रभो रुचिरम् ।
अलकं प्रसाध्य माधव स्वकरेण चारु चिरम् ॥ २

1 Ms °वरसना°. 2 Ms °पोततोषित°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यादृशी तव गण्डमण्डलमण्डिता मकरी ।
क्रियते न किं मम तादृशी मदनप्रतापकरी ॥ ३

लोचने कुरु कज्जलं तिलकं ललाटतले ।
कुण्डले परिधापय प्रिय सुश्रवोयुगले ॥ ४

तार हारममुं कुरुष्व मदीयकण्ठतटे ।
नन्दनन्दन चन्दनं कुचयुग्मकामभटे ॥ ५

नीलरत्नमयं करे वलयं निधेहि हरे ।
वर्धय प्रिय वीटकैररुणप्रभामधरे ॥ ६

अंशुकं न करोषि किं कलकिङ्किणीसहिते ।
प्राणनाथ कटीतटे सुरतत्रपारहिते ॥ ७

नूपुरौ नवनादवादनकारिणौ चरणे ।
जीवितेश विधेहि वल्लभ यावकाभरणे ॥ ८

सुन्दरीवचनामृतश्रवणेन तुष्टमनाः ।
सोमनाथहृदि स्थिरीभवतादसौ सुमनाः ॥ ९।१८

[इत्यष्टादश्यष्टपदी]

[१९]

तस्याः स्पर्शसुखाशया कृतनोरङ्गेषु भूषाङ्गण-
न्यासं नन्दकुमार एव कुरुतेकामाङ्कुरोद्भेदकृत् ।
मुक्तागुम्फितमेखलागुणयुतां बध्नाति नीवीं कटौ
दत्ते चित्रमुरोजयोर्विरचयन् पत्रे कपोलस्थले ॥ १

कर्णौ कुण्डलिनौ करोति नयने [1]सूक्ष्म क्षिपत्यञ्जनं
तद्भाले तिलकार्पणेन कथयत्यन्या न धन्याः स्त्रियः ।
तद्वेणी किल कामचामरमिति प्राचंत्यसौ पुष्पकै-
रित्थं कामकलाकलापकुशलो राधावशे वर्तते ॥ २

---

1 Ms °श्क्ष्म°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धन्याशीरागेण ॥ १९ ॥

हृदि रङ्गरसम् ।
जनयति कामकलासरसम् ॥ ध्रु० १

कुसुमचयैरञ्चति कुचभारम् ।
मनुते मन्मथचामरसारम् ॥ २

मुखमलिके तिलकेन सलोभम् ।
कुरुते चन्द्रमसा समशोभम् ॥ ३

क्रियते चक्षुषि कज्जलरेषा ।
तेन तिरस्कृतखञ्जनवेषा ॥ ४

कर्णपुटस्थितकुण्डललीला ।
अनुसृतबन्दीकृतरविलीला ॥ ५

लिखति कपोले मृगमदचित्रम् ।
निजरसमिव निःक्षिपति विचित्रम् ॥ ६

सोमनाथसेवकसुखकारी ।
भवतु सदा गिरिराजविहारी ॥ ७।१९

[इत्येकोनविंशतितमाष्टपदी]

[२०]

वशीकृतः संप्रति राधयासौ करोति तद् यद् वदति प्रिया सा ।
तदङ्गसङ्गामृतकाम्ययैव विभूषणन्यासमयं व्यधत्त ॥ २

कथयति सखि राधा प्राणनाथं प्रतीदं
मम शिरसि शिखण्डं कुण्डले कर्णदेशे ।
रचय रुचिरगुञ्जापट्टकूलं कटौ मे
त्वमिव भवितुमीहे वंशिकां देहि पाणौ ॥ २

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रामगिरीरागेण मण्ठतालेन ॥ २० ॥

राधा वदति रसाभिनिवेशा ।
त्रिभुवनयुवतीवरयुवतीसंविरचितमोहनवेशा ॥ ध्रु० १

मुकुटीकुरु मम मदनमनोहरशिरसि शिखण्डिशिखण्डम् ।
मकराकृतिकुण्डलधारणेन महासभमण्डपगण्डम् ॥ २

गुञ्जामणिमाला मम कण्ठे सुन्दरवर परिधेया ।
सदयहृदय हृदये मम मानद मृगमदरुचिरपि देया ॥ ३

कनकरुचिरवसनेन शुभाशय शोभय कटितटदेशम् ।
मुरलीधर मुरलीमर्पय मम गापय मदननिदेशम् ॥ ४

त्वमिव भवामि भृतामितगौरवगिरिवर दधती रूपम् ।
हरिरपि गदति सुदति रतमिच्छसि कामिनि मयानुरूपम् ॥ ५

मामपि कुरु मानिनि निजभूषणभूपितमम्बुजनयने ।
शशिमुखि पञ्चशरं परिभावय पल्लवकोमलशयने ॥ ६

इति कथयति सति हसति शनैरिह विकसितमुखतामरसा ।
पतिविजयाय विजृम्भितरतिरणपौरुषरसरुचिसरसा ॥ ७

इति रसकेलिकथासु परस्परमुभय[1]किशोरकजल्पम् ।
सोमनाथकथितं कथयन्तु मुदा परिहाय विकल्पम् ॥ ८।२०

[इति विंशतितमाष्टपदी]

***

क्षोभं क्षामकटिर्जगाम जघने जाते च किञ्चिज्जवे
प्रस्विन्ना तनुवल्लरी शिथिलितो दोर्वल्लिबन्धोऽभवत् ।
पर्यस्तालकमण्डली मुकुलिते नेत्रे उरः कम्पितं
पुंभावेन जुगोप गोपतरुणी स्त्रीत्वेऽपि धैर्यच्युतिम् ॥ १

***

1 Ms °किशोक°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सत्कामकेलिकृतकौतुकवेषधारी
हारी हरिन्मणिमनोहरदेहकान्तिः ।
श्रीराधिकावदनपङ्कजपानमत्तो
मत्तोषकः सपदि सुन्दरमूर्तिरस्तु ॥ २

नर्तितकुटिल[1]भ्रुकुटीप्रकटीकृतकोकशास्त्रवैदग्ध्यः ।
कलयतु हृदि प्रवेशं कालिन्दीकेलि[2]कौतुकः कृष्णः ॥ ३

न स्पर्द्धा जयदेवपण्डितकृतौ नो रञ्जनीया बुधा
राजभ्यो धनलाभलोभकलया न व्याकुला मन्मतिः ।
भक्ताः किं नु हरेर्गुणानुकथने रक्ता [3]भवन्त्येव नो
तन्मे स्वस्य मनोविनोदनकृते श्रीकृष्णगीतिः [4]कृता ॥ ४

इति श्रीसकलकविचक्रचूडामणिना श्रीसोमनाथमिश्रेण विरचिता अष्टपदी [5]संपूर्णा ॥

*

---

1 Ms °भ्रूकुटी.° 2 Ms °केली°. 3 Ms °भवन्त्येव तेनो. 4 Ms कृताः. 5 Ms °र्णाः.

[पुष्पिकानन्तरमिदमधिकं समुपलभ्यते]

गुञ्जापुञ्जावतंसः प्रकटितनटवेषसुन्दरः कृष्णः ।
मुरलीवन्दितवदनो वल्लववनितावृतो जयतु ॥

करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः ॥
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥ संवत् १६३७ वर्षे कार्तिकवदि १ रवौ राजनगरस्थेन ज्योतिश्री आपाजीतनयेन लिखितं ॥ समाप्तोऽयं गीतगोविन्दः ॥ श्रीः ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रतीकानुक्रमणिका

[The first figure indicates **पद** and the second **अष्टपदी.**]

अगणितगुणगौरव	६	११
अगणितवैभव	७	५
अङ्गसङ्गमसुखं	५	६
अतिकामितया तयानुरक्त (श्लो.)	२	१४
अतिचपलचारु	४	६
अतिमन्दीकृतजित	७	८
अतिरसरभसपरा	६	९
अतिरुचिरुचिकरलम्भित	५	१७
अतिक्षामालापं मधुरिम (श्लो.)	२	९
अद्भुतशोभा रजनिविरामे	१	१७
अधरमधुसुधारसास्पदेन (श्लो.)	१	१२
अनिशं निशि कुरुते	१	५
अनुनय विनयगिरा	७	२
अनुसृतवन्दीकृतरवि	५	१९
अपनय मदनदुरन्त	७	२
अलकं प्रसाधय माधव	२	१८
अलघुललितलावण्य	२	११
अंशुकं न करोषि	७	१८
असौ निःश्वासः किं (श्लो.)	१	१०
आनन्दनाय कुरुते ,,	४	१
आयाता पुनरन्तिके ,,	१	६
आलिङ्गति चुम्बति	१	८
आविर्भूय मुदं ददातु (श्लो.)	१	१४
आस्यं हास्यवियोगि ,,	१	३
इच्छति तव मधुराधर	२	४
इच्छन्नभीरुरपि भीरुरिव (श्लो.)	२	१०
इति कथयति सति	७	२०
इति कुञ्जकेलिकमनीय	८	१२
इति कृतसोमनाथरसरचनम्	८	५
इति न च वेद	७	७
इति नवकुञ्जरसप्रिय	८	१३
इति नवरङ्गसङ्गसुख	८	८
इति निजवशगत्वं (श्लो.)	२	१२
इति रसकेलिकथासु	८	२०
इति श्रुत्वा सख्याः (श्लो.)	१	७
इत्थं कामकलाकलाप ,,	२	१९
इयमधरमाधुरी रहसि	३	१२
इयमधिकमनोज्ञा कामिनी (श्लो.)	२	१२
इयमुदितदूतिका	८	६
इत्याभीरशिरोमणिं (श्लो.)	१	६
उच्चकुचरोचिरञ्जित	५	१२
उदेतु हृदयाकाशे (श्लो.)	२	१
उद्भटमल्लचमूरिव	६	१०
उपरि विलासवती	७	९
उरसि मनोरममणिमयहारा	५	१५
कटिपटुरटितरुचिरशना	२	७
कटिविघटितमृदुवररशना	४	१७
कण्ठक्वाणसमस्वरा (श्लो.)	३	६
कर्णपुटस्थितकुण्डललीला	५	१९
कर्णौ कुण्डलिनौ करोति (श्लो.)	२	१९
कथयति केशव तव	२	५
कथयति सखी राधा (श्लो.)	२	२०
कथयन्नुपमानमानताङ्ग्या ,,	२	१४
कनकरुचिरवसनेन	४	२०
कम्पसे किमिति	२	६
करोति न कलक्वणं (श्लो.)	२	७
कलयति यावदसौ न	२	३
कलयतु हृदि प्रवेशं (श्लो.)	३	P.२४
कलय राधिके मदनगोपाल(ध्रुव)	२	६
कलय वलय रञ्जितकरकमले	७	१०
कलयसि किं विफलं	६	२
कलितललितस्वरश्रुति	१	६
कलितविलोचनकज्जलरेखा	३	१५
का न कामिनि	१	६
कान्तेन प्रतिबोधितापि. (श्लो.)	२	२
कामकनकसिंहासनमिव	६	१३
कामकौतुकरसानां	८	६
कामबाणकृत	३	५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कामबामरसे (ध्रुव)		१	१५
कामविजयपरमेव		१	७
कामाकुलो जपति	(श्लो.)	२	६
कामः कालति कृष्ण	,,	१	५
किञ्जल्के कमलस्य	,,	४	६
किमिति तनूकुरुषे		६	३
किमिति विदधासि		६	६
किमु विलम्बनमिदं		४	६
किं कथयामि तरुण		७	४
किं कुरुषे पुरुखेलन		४	१३
किं कुरुषे पुरुषे		४	२
किं कृशयसि विरहेण(ध्रुव)		–	२
किं सहसे मदनानल		१	२
क्रियते चक्षुषि		४	१९
क्रियते न किं मम तादृशी		३	१८
कुङ्कुमरसरञ्जिततनुवल्लि		६	१५
कुङ्कुमरसरञ्जितमङ्गलमय		७	११
कुचतटनिकटलसित		२	७
कुचद्वन्द्वं चैतत्	(श्लो.)	१	१०
कुञ्जतले नवपल्लवतल्पे		२	१५
कुटिलभृकुटिकोदण्ड		५	१९
कुटिलकामकलुषं		८	१६
कुञ्जनाथ कलेश केशवं		१	१
कुण्डले परिधापय प्रिय		४	१८
कुप्यति वदति जहीहि		५	१६
कुरवककरुणकदम्ब		२	१६
कुरुते चन्द्रमसा समशोभं		३	१९
कुसुमकदम्बकलित		१	७
कुसुमितकुञ्जकुटिर		१	१६
कुसुमचयचित्रचुम्बित		२	१२
कुसुमचयैरञ्चति		२	१९
कुसुमानि मे कबरीभरे		२	१८
केलिकौतुककौशलैरतनु		१	१८
केशव किं चिरयसि (ध्रुव)		२	४
कोकिलकुलकोलाहल		३	१६
कोटिमन्मथमथनमाधुर्य		१	१२
को विदधाति		५	१०
कृततरणितनूजा	(श्लो.)	३	२
कृष्णस्ते नवकुञ्ज	,,	४	२
कृष्णसारसमानता		७	१४
कृष्णस्य गीतमिदम्	(श्लो.)	४	१
कृष्णं जगाद मृगशाव	,,	१	१८
कृष्णांह्रिपद्ममकरन्द	,,	४	१
क्वचिच्चकितमीक्षणं	,,	२	७
क्वचित् तरुषु	(श्लो.)	२	७
क्वचिदुत्सङ्गनिवेशितया		४	९
क्षामाक्षरं पुलकवेपथु	(श्लो.)	१	१७
क्षोभं क्षामकटिर्जगाम	,,	१	P.२३
खञ्जनमदभञ्जन		२	११
खण्डते तन्वि तिमिरं		७	१२
गच्छति घनवनयमुना		६	४
गण्यते निकषोपमा		४	१४
गन्तुं न पारयति ते	(श्लो.)	२	६
गमयतु तरुणीचित्तविषादम्		७	४
गलन्मुक्तामालं	(श्लो.)	२	९
गलिताधरशोणिमशिथिला		२	१७
गीयतामनिशं जना भव		८	१
गीयते सखि दीयते		१	१४
गुञ्जापुञ्जावतंसः प्रकटित p. 24 Footnote			
गुञ्जामणिमाला मम कण्ठे		३	२०
गुणवति भवति समर्पितदेहा		७	५
गोकुलेश गुणज्ञ		५	१
गोपस्त्रीवशकारिणी	(श्लो.)	३	१
गोपिकागणगीतगौरव		५	१
घटयति भुजबन्धं	(श्लो.)	१	८
घनजघनकुचान्तः	,,	१	९
घनतमसि कानने		४	६
चटुलचरणद्वयं		७	१२
चपलयति चेत		२	१२
चमूर्नेयं राधे	(श्लो.)	१	१०
चल कुण्डलमण्डित		४	१५
चल कुण्डलमर्दित		७	१७
चल मलयसौरभे		५	६
चल सखि कुरु (ध्रुव)		२	३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चलसि न किं	६	२
चारुचिबुके कृतो	४	१२
चिरवियोगविगलित	४	१२
चुम्बनचारुनिषेध	५	११
चुम्बने कं न भावयति	३	१२
जनयति कस्य न	३	११
जनयति कामकलासरसम्	१	१९
जनयति कं न रसं	७	९
जनयति रदखण्डं (श्लो.)	१	८
जनयतु रसिकसुखं	८	४
जनयतु वरतरुणीरति	८	९
जनयतु वल्लवयुवती	८	३
जनय भामिनि	२	६
जनयसि किं मनसि (ध्रुव)	–	३
जय जय राधिकारमणीय	१	१
जयदेवकृताविवात्र (श्लो.)	५	१
जायते मयि चारुहासिनि	६	१४
जितकण्ठकलकण्ठि	४	१२
जितवती निजदेह (श्लो.)	२	९
जीवितेश विधेहि	८	१८
तत् संभावय भावगर्भितगिरा(श्लो.)	४	२
तदङ्गसङ्गामृतकाम्ययैव (श्लो.)	१	२०
तदधरमधु पीत्वा ,,	१	८
तदपि व्रजनाथकीर्तने ,,	५	१
तदवस्थां समाख्याय ,,	३	५
तद्भाले तिलकार्पणेन ,,	२	१९
तद्वेणी किल कामचामर ,,	२	१९
तन्मुखेनैव तत्सख्या ,,	३	४
तन्मे मानिनि शंस ,,	१	३
तन्मे स्वस्य मनो ,,	४	P.२४
तन्वि त्वद्वदनानुकारिकमलं ,,	३	६
तन्वि पोषयति	४	१२
तन्वी निजलावण्य	४	८
तमिह सुभगे	४	६
तरलालककुलकलित	६	९
तव चरणौ प्रणमामि	१	२
तव विरहानल	४	३

तव संगमसुखहेतुरियं	६	१०
तस्याः स्पर्शसुखाशया (श्लो.)	१	१९
तारहारममुं कुरुष्व	५	१८
तिष्ठेत् सुन्दरि (श्लो.)	४	६
तेन तिरस्कृतखञ्जनवेषा	४	१९
त्यजति तवैव कृते	२	५
त्रिजगति रतिकौशलवति	२	१०
त्रिभुवनयुवतीवरयुवती	१	२०
त्वदधरमधुरपान	४	५
त्वद्वेणी सदृशं बिभर्ति (श्लो.)	३	६
त्वमसि वरवर्णिनी	२	६
त्वमसि विदग्धतरा	१	१०
त्वमसि सकलतरुणी	५	२
त्वमिव भवामि	५	२०
त्वमिव भवितुमीहे (श्लो.)	२	२०
त्वयि नवकुञ्जविहारिणि	२	१०
त्वरय कामाकुले	६	६
त्वामतिहाय न किञ्चन	१	५
त्वांमयं तन्वि	१	६
त्वं चेत् पङ्कजिनी (श्लो.)	१	१५
त्वं प्रिये चपलाहमस्मि	२	१४
त्वं प्रेष्ठा तव (श्लो.)	१	४
त्वं भविष्यसि सकलयुवती	७	६
त्वं मनोजतरङ्गिणी	३	१४
त्वं यदा नलिनी (श्लो.)	३	१४
त्वं यदा मदविह्वला	६	१८
त्वं यदा सरसीव	५	१४
त्वं यदा हरिणीव	७	१४
त्वं लता ललिताहमस्मि	२	१४
त्वं विद्युज्जलदोऽहमस्मि (श्लो.)	१	१५
त्वं शृङ्गारतरङ्गिणी यदि ,,	१	१५
त्वं समा कलधौत	४	१५
दत्तचित्ता सती	७	६
दत्ते चित्रमुरोजयो (श्लो.)	१	१९
ददस्व परिरम्भणं ,,	१	१३
दलितकलधौतकदली	६	१२
दिशि दिशि सुभ्रु (ध्रुव)	१	१४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्विरदकुम्भकमनीयतरं		४	१०
दुन्दुभिरिव रशना		५	१०
दुस्तरतरमन्मथसङ्गरजित		६	१७
दूरीकुरु करभोरु		५	१३
दोषं स्वप्नदशानुभूत	(श्लो.)	४	२
दृष्टिं ददाति दयितस्तव	,,	२	६
धनुरिव भृकुटियुगं		३	१०
धैर्यध्वंसि धनुर्दधाति	(श्लो.)	१	४
ध्यायति तव मुख		६	५
ध्यायति तव मृदुवचन		३	४
नर्तितकुटिलभ्रुकुटी	(श्लो.)	३	P.२४
नन्दनन्दनचन्दनं		५	१८
नन्दनन्दमनिन्दितरुचिर		३	६
नयननलिनपीतः	(श्लो.)	२	१२
नयनस्थितसुन्दररसतन्द्रा		४	१५
नर्तनमिव कुरुते		७	१६
नवनवकुञ्जविलासभरेण		८	९
नवनिकुञ्जमधुकर		६	१७
नवलरसवशीकृतेन	(श्लो.)	३	९
नवशृङ्गारसुधारसतृष्णम्		५	३
नवनिकुञ्जभवने (ध्रुव)		–	८
न स्पर्द्धा जयदेव	(श्लो.)	४	P.24
नहि नहि वचनममृतमीव		६	१६
नानाजनितसुरत		२	२
नाभिगम्भीरसरसीतटे		६	१२
नाशयति दुःसहं		३	१२
निकुञ्जगृहवासिनं	(श्लो.)	१	२
निजरसमिव निःक्षिपति		६	१९
निधुवनरभसगलित		५	८
निपुणतरा सुरते		७	१५
नीलरत्ननवीननीरद		३	१
नीलरत्नमयं करे		६	१८
नूपुरौ नवनादवादन		८	१८
नेत्रेऽञ्जनं कुरु	(श्लो.)	१	१८
नो चन्दने न कमले	,,	२	६
नो भाले तिलकोऽलको	,,	१	३
न्यासं नन्दकुमार एव	,,	१	१९
पङ्कजायतमत्तलोचन		७	१
पतिविजयाय विजृम्भित		७	२०
पदकमलोपरिनादित		३	७
पर्यस्तालकमण्डली	(श्लो.)	१	P.२३
परिमोचय कञ्चुकपञ्जरतः		३	१३
परिरम्भणशिथिलितभुज		६	८
पश्यति तव हृदयागतरूपम्		४	४
पश्यसि किं न		३	२
पायय पिब मानिनि		२	१३
पारापतप्रतिवादकमादक		७	११
पालयतीव पयोधरयुगलं		६	७
पावनेऽमरनिकरगीत		७	६
पिबति मधुरमधरं		३	८
पुन्नागनागनवचम्पक	(श्लो.)	१	१६
पुंभावेन जुगोप	,,	१	P.२३
पुमांसमनुदासिनं	,,	१	२
पुष्पाणि मे रचय	,,	१	१८
प्रणयविनयवाक्या	,,	३	२
प्रत्यङ्गवर्णनमिषेण	,,	२	१०
प्रत्याह प्रियकोमलाक्षर	,,	२	६
प्रमुदितपिकपारापतकूजित		५	७
प्रसादं कर्तुं सा	,,	१	७
प्रस्विन्ना तनुवल्लरी	,,	१	P.२३
प्राणनाथ कटीतटे सुरतत्रपा		७	१८
प्रियचतुरवचो विचित्रयुक्त्या	(श्लो.)	२	५
प्रियस्वसख्यै परितुष्टचित्ता	,,	२	१५
प्रिये क्वणय किङ्किणीं	,,	१	१३
बहु विलपति विरहे		१	४
बिम्बाधरनिःसरदमृत		५	११
बोधयतीव मदनमद		१	८
बोधयन्ती सखी प्राह	(श्लो.)	३	५
भक्ताः किं नु	,,	४	P.२४
भङ्गुरभ्रुकुटीतटप्रकटी		२	१
भवतु सदा गिरिराज		७	१९
भाति कुचोपरि मञ्जुल		६	१५
भुजपरिरम्भविमर्दविखण्डित		३	१७
भ्रुवौ कोडण्डः किं	(श्लो.)	१	१०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भ्रूचापच्युतवक्र	,,	२	२
भेजे हरिर्मदनकेलिरसं	,,	१	१६
मकराकृतिकुण्डलधरणेन		२	२०
मञ्जुमञ्जीरधीर		७	१२
मञ्जुवञ्जुलविहित		५	४
मण्डनं तव सहज		६	६
मणिरहमपि लीलाक्रीत	(श्लो.)	२	१२
मत्तोषकः सपदि सुन्दर	,,	२	P.२४
मदनजालमिव कलयति		५	५
मदनबाणकृतबहुविधबाधा		१	४
मदनदहनमुग्धस्वान्त	(श्लो.)	३	२
मदयति मम चेतस्तव (ध्रुव)		१	११
मदुरसि सरसि विनोदय		३	१३
मन्थरचरणविहार		५	१७
मन्मथविलासकारी	(श्लो.)	१	११
मधुमथनप्रियसरसाकुल		७	८
मधुरिमकृतपीयूषपराभव		२	१३
मधुरिमसकलधुराधरणोचित		३	७
मनुते मन्मथचामरसारम्		२	१९
मम शिरसि शिखण्डं	(श्लो.)	२	२०
माधव मधुरिमपरिहृतचित्ता(ध्रुव)		–	५
माधव विरहगतस्मितहासा		५	४
माधव व्रजनाथ		२	१
मानयिष्यति		१	६
मानिनीरतिकन्द मानद		४	१
मानें मुञ्चसि नाग्रहं	(श्लो.)	१	४
मानं मा कुरु	,,	३	२
मा परिहर वल्लवपतिसङ्गम्		२	२
मामनुचरमिव मानिनि		७	१०
मामपि कुरु मानिनि		६	२०
मामवति कामसंग्रामकाले		५	१२
मामसौ सुदति		६	१२
मारयति पुष्पधन्वा		५	१२
मालत्यशोकमधुमत्त	(श्लो.)	१	१६
मीनकुण्डलमण्डितानन		३	१
मुकुटी कुरु मम		२	२०
मुकुलितलोचनचुम्बन		२	१७

मुक्तागुम्फितमेखला	(श्लो.)	१	१९
मुखमलिके तिलकेन		३	१९
मुखरयमुषितमृगीगण		५	१३
मुखे मानं ध्यानं	(श्लो.)	२	३
मुग्धे त्वत्करकोमलं	,,	३	६
मुञ्चति कुसुमशरः (ध्रुव)		–	४
मुञ्चति लोचननीर		३	५
मुदितमधुव्रतकोकिल		२	१५
मुररीधरमुररीमर्पय		४	२०
मुरलीनन्दितवदनो	footnote		P.२४
मेचकमणिकल्पित		७	१५
मृगमदतिलकाङ्किना	(श्लो.)	१	१२
मृगमदलिखितविचित्र		३	१७
मृगमीव सा विवशीकुरुते		५	९
मृगीदृशः कामकठोरबाण	(श्लो.)	२	४
म्लिष्टाधरारुणिमशोणि	,,	१	१७
यद्गोपिकाकराम्भोज	,,	१	१
यद्वाचो हिमशीतला	,,	१	१४
यच्चेष्टा व्रजपालबाल	,,	१	१४
यत्पाणी कमलश्रियौ	,,	१	१४
यादृशी तव गण्डमण्डल		३	१८
यावकरसरञ्जितमिदमर्पय		७	१३
युवतीजनमनसामनुरूपम्		४	४
येन विनश्यति कलिमल		८	२
रचय रुचिरगुञ्जापट्टकूलं	(श्लो.)	२	२०
रचय रुचिरनयने		३	३
रचय सुन्दरकथा		३	६
रचितविशेषकचित्र		३	१५
रणति जयमिवास्याः	(श्लो.)	१	९
रतान्ते तद्रूपं	,,	२	९
रतिरसरसिकशिरोमणि		४	७
रतिसमयोचितविरचित		५	८
रमणि यमुनातटे		५	६
रमते हरिरिह रुचिर (ध्रुव)		१	१६
रमयति राधा नन्दकुमारम् (ध्रुव)		१	८
रमयति स्म मनोभव	(श्लो.)	२	८
रमय वने बहुकुसुमितनीपे		७	३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रसिकजने कुरुतां	८	१५
रसिकजनेषु मुदं	८	११
रहसि विमुञ्चति	६	४
राजति राधा नवलवशे	१	१५
राजते तरुणि तव (ध्रुव)	१	१२
राजभ्यो धनलाभलोभ (श्लो.)	४	P.२४
राजसि किमिति न	७	३
राधाजीवितधारिणी (श्लो.)	३	१
राधा तव विरहाकुलचित्ता (ध्रुव)	२	५
राधा वदति रसाभिनिवेशा (ध्रुव)	१	२०
राधा सखी माधव ,,	२	४
राधा सखी वर्णयति (श्लो.)	२	१५
राधा सखीं समादाय ,,	३	४
राधा हरिभवनं (ध्रुव)	१	७
राधिका गुणगौरवस्तुतये	८	१४
राधिकामनसि मोदं	८	६
राधे माधवमनुसर (ध्रुव)	२	२
राधे वशयसि मामधिकं (ध्रुव)	१	१०
राधे विरचय मयि (ध्रुव)	१	१३
रात्रिः कल्पति कृष्ण (श्लो.)	१	५
रासनर्तित	६	१
रुचिकरचपलविलोचन	४	१३
रुचिरकुसुमकोमलदल	२	९
रूपं तथापि रुचये (श्लो.)	१	१७
लिखति कपोले	६	१९
लोकलोचनसुखददेह	७	६
लोचनयुगलममीलि	६	८
लोचने कुरु कज्जलं	४	१८
वचनरचनं कथितरूप	८	१२
वर्णयति भूरिभावैर्व्रज (श्लो.)	१	११
वदति प्रिया सुरतेन (ध्रुव)	१	१८
वर्धय प्रिय बीटकैररुण	६	१८
वनावलिविलासिनं (श्लो.)	१	२
वन्दे नन्दकिशोरस्य ,,	१	१
वल्लवीदेहवर्णन	८	१२
वल्लवीमुखचन्द्र	४	१
वशयति पतिचेतश्चेतनी (श्लो.)	१	८
वशीकृतः संप्रति ,,	१	२०
वाञ्छसि यदि माधव	४	२
वासस्ते मलिनं तनु (श्लो.)	१	३
विकचकुसुमगुम्फित	५	१५
विकचबकुलकलिका	३	१६
विकारं कामोत्थं (श्लो.)	१	७
विकाशयतु मच्चित्त ,,	२	१
विचलदलकमालालोल ,,	१	९
विदधति युवतिजनेषु	२	१६
विनोदय कुचौ (श्लो.)	१	१३
विमलदशनकिरणावलि	३	११
विरहहतविलासां राधिकां (श्लो)	३	२
विलसति नीलगिरे	४	८
विविधकामकलाकुशला (श्लो.)	२	८
विविधनिखिलसौरतरस	७	१७
विविधरसरङ्गरञ्जित	१	१२
विहरति ललितलता (ध्रुव)	१	९
विहरति वरवर्णिनी (श्लो.)	३	९
वेणुनादविमोहित	७	१
व्यथयति विधुरपि	४	३
व्रजकुलतिलकविहित	४	७
व्रजकुलतिलकं विषाद (श्लो.)	२	५
व्रजदयिता दयितानन	१	९
व्रजपतिरचितरुचिर	८	१०
व्रजपतिं वनिता (श्लो.)	२	८
व्रजपतिविहितविशद	५	१६
व्रजभूषणवक्षसि	२	८
व्रजरमणीरमणीय (श्लो.)	२	५
व्रजपतेश्चचाल ,,	१	७
वृथावहसि	२	३
वृन्दावने नवनिकुञ्जतले (श्लो.)	१	१६
शमयति मनसि	३	४
शमय मनोभव	१	३
शमय विषमविलोचन	७	१३
शमय सुन्दरि	३	६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शरदि विशदसरसिजमिव	१	११
शशाङ्कसितहासिनं (श्लो.)	१	२
शशिनि शशभ्रमदायि	४	११
शशिमुखि पञ्चशरं	६	२०
शशिवदना मदनालसगमना (ध्रुव)	–	७
शशिकृतमरकतमणि	४	९
शालपल्लवपाणिपल्लव	६	१
शितशरनिकर इव	३	१०
शीतांशुस्तपनत्यरण्यति (श्लो.)	१	५
शृङ्गारी तव कुञ्ज ,,	१	४
श्रमजलविपुलपुलकपृथु	४	१७
श्रमशीकरशोभित	३	८
श्रवणपुटपुरटताटङ्क	२	१२
श्रिया शोभते	२	६
श्रीमन्नन्दकुमारकाम (श्लो.)	१	६
श्रीराधिकानवलकेलि ,,	४	१
श्रीराधिकावदनपङ्कज ,,	२	P.२४
शृणुतसकलकलिकालिमहारि	८	१७
श्लथयति कटितट	६	१६
सत्कामकेलिकृत (श्लो.)	२.	P२४
सखि संप्रति राधिका	१	१७
सदय हृदये मम	३	२०
सदानन्दां नन्दात्मज (श्लो.)	२	३
सफलय मम नयने	६	१३
स बहु करोति	५	२
सर्वामङ्गलहारिणी (श्लो.)	२	१
सस्वेदबिन्दुवदनं ,,	१	१७
सा कुरुते निजकञ्चुक	६	७
सानुकम्पा	६	६
सापि निपीय सरस	७	७
सापि ललाटपटल	४	१६
सारसी रटति सौरत	६	१२
सारूप्यं तव पीतवंशकुसुमे (श्लो.)	४	६
सा विदधाति मनसि	२	४
सा स्वप्ने सुदती (श्लो.)	२	२
सुखमनुभव सुन्दरि	१	३
सुखयतु जनमबला	८	५
सुखय सदा करुणामय	५	५
सुतनु सुतनु परिरम्भण	१	१३
सुन्दरं रमय	३	६
सुभग भुजवल्लिकागाढ	५	१२
सुभगविशालभालभुवि	४	११
सुमुखि तव लोचनं	३	१२
सुन्दरीवचनामृत	९	१८
सुरतकलाकौतुक	३	९
सुरतरसकेलिकुतुकेन (ध्रुव)	–	६
सुरतविनोदकृते	७	११
सुरतविहितरसभाव	६	३
सुस्निग्धान्यवधू (श्लो.)	२	२
सेवक विविधरसैरिह	५	३
सेवक सोमनाथकृतगीतम्	८	४
सोमनाथकथितं कथयन्तु	८	२०
सोमनाथजने सदा	८	१४
सोमनामवर्णितहरिचरितम्	८	२
सोमनाथविभुनारचिता	८	११
सोमनाथहृदि जनयतु	८	८
सोमनाथहृदि हरतु	८	१३
सोमनाथहृदि स्थिरीभव	९	१८
सोमनाथहृदि सुखमुपगीतम्	८	३
सोमनाथसुखाय	८	१
सोमनाथसेवककृतगानम्	८	१५
सोमनाथसेवकमुखनिःसृतराधा	८	७
सोमनाथसेवकमुखनिःसृतमुभय	८	१६
सोमनाथसेवकवर्णितमिति	८	१७
सोमनाथसेवकसुखकारी	७	१९
सोमनाथसेवकसुखदा	८	१०
सोमनाथे सदा भवतु	८	६
सोमनाथे सदा शुभ	८	१२
संभ्रमचलितललित	२	८
संभाव्य कामनृपतेः (श्लो.)	२	१०
संभोगयोगरुचिरं ,,	२	१०
स्थितमवमत्य नृप	४	१०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्थितवति रतिरमणीयतरे	२	९	हरिरपि तव कुरुते	३	३
स्निग्धकज्जलबिन्दु	४	१२	हरिरपि बन्धविशेष	३	९
स्पृशति कुचौ मधुरं	४	१६	हारी हरिन्मणिमनोहर (श्लो.)	२	P.२४
स्फुटमसौ सुतनु ते (ध्रुव)	–	६	हारेण रोचय कुचौ ,,	१	१८
स्वर्णे विद्युति कुङ्कुमे (श्लो.)	४	६	हारः सर्पति चन्दनं ,,	१	५
स्वयं नैवायान्तीं ,,	२	३	हासश्रीर्व्रजसुन्दरस्य ,,	३	१
हठकृतमुखचुम्बन	५	७	हृतवति घनजघनावरणं	७	१६
हन्ति मामपि त्वदियम्	२	१२	हृदि रङ्गरसम् (ध्रुव)	१	१९
हरिणा सह परिभावय	३	२	हृदि विदधासि न	६	५
हरिरपि गदति सुदति	५	२०	हृदि स्वपदमर्पय (श्लो.)	१	१३

☆
☆☆

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूड़ामणि सर्वदेव । २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता । ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ । ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान । ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा । ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट । ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज । ९ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याणगणी । १० नृत्तसंग्रह – अज्ञातकर्तृक । ११ शृंगारहारावलि – हर्षकवि । १२ कृष्णगीति – कवि सोमनाथ ।

प्रेस में

१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित । २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह । ३ करुणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव । ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र । ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा । ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी । ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि । ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट । ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट । १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर । ११ कारकसंबन्धोद्योत – पं. रभसनन्दी । १२ नृत्यरत्न कोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव । १३ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक । १४ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी । १५ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक । १६ रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक । १७ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर । १८ एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक । १९ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त । २० वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक । २१ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २२ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २३ गोरा वादल पदमिणी चऊपइ – कवि हेमरतन । २४ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास । २५ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नेणसी इत्यादि ।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust